मेरी खेती

Page No. 1-23 / November 2021

- खेत खलियान
- पशुपालन - पशुचारा
- मशीनरी
- सरकारी नीतियां

- किसान समाचार
- औषधीय खेती
- प्रगतिशील किसान
- दिसम्बर माह के कृषि संबंधी आवश्यक कार्य

krishan@merikheti.com
www.merikheti.com
+91 766 8256 275

संपादकीय

डीजल ने बेदम किए किसान

अभी तक आपने जल ही जीवन है, श्लोगन सुना होगा लेकिन मशीनी युग में दूसरे संसाधनों के विकसित न होने तक डीजल ही जीवन बन गया है। डीजल की कीमतों में इजाफे का असर हर चीज पर साफ दिख रहा है। लोहा, प्लास्टिक, सीमेंट ही नहीं अनेकों वस्तुओं पर बेतहाशा महंगाई का संबंध किसी न किसी रूप में डीजल से भी है। सवा अरब से ज्यादा आबादी को हर दिन अनेक प्रकार की सब्जी, फल, अनाज, दालें, दूध, आदि वस्तुओं की आपूर्तिकर्ता किसान डीजल की कीमतों के जलजले से हलकान है। जोत महंगी, सिंचाई महंगी, बंटाई पर खेतों की कीमतें पहले से ज्यादा, इधर देश में डीएपी की किल्लत भी किसी जलजले से कम नहीं हैं। बढ़े समर्थन मूल्य या यूं कहें धान जैसी फसलों की थोड़ी संतोषजनक कीमत मिलने से किसान डीजल की कीमतों को लेकर सड़कों पर नहीं उतर रहे हैं, यादि कीमतें गिरी तो वह दिन दूर नहीं किसानों का कोहराम किसी भी सरकार की चूलें हिला देगा।

खेती का सीधा संबंध जल और डीजल दोनों से है। न तो बिना पानी के खेती संभव है ना बगैर डीजल के खेती की कल्पना की जा सकती है। किसान कभी पानी को लेकर अफरा तफरी का शिकार रहता है तो कभी डीजल की कीमतों को लेकर। यानी कई सिंचाई परियोजनाएं कई-कई राज्यों से होकर निकलती हैं। जो राज्य पहले पड़ते हैं वहां के किसान पानी पर पहले अपना हक समझते हैं। इसका खिमियाजा बाद में पड़ने वाले राज्यों के किसान भुगतते हैं। गैर राज्य छोड़दें तो एक ही राज्य में सिंचाई जल का उपयोग पहले हैड क्षेत्र वाले किसान करते हैं बाद में दूसरे जिले के किसान करते हैं। हरियाणा से यूपी और राजस्थान की ओर जाने वाली नहरों से पानी का उपयोग पहले वहां के किसान ही करते हैं। इसमें चोरी और सीनाचोरी दोनों होती हैं।

बात डीजल की है। डीजल के कई राज्यों में अलग अलग रेट हैं। बीते एक डेढ़ माह से राजस्थान के किसान बड़ी तादात में उत्तर प्रदेश के पेट्रोल पंपों पर रात दिन डीजल लेने आ रहे हैं। ट्रैक्टर ट्राली और मैक्स जैसे वाहनों में भारी मात्रा में ड्रमों में डीजल भर भर कर ले जाया जा रहा है। यूपी और राजस्थान में डीजल की कीमतों में करीब 10 रुपए लीटर का अंतर है। इधर उत्तर प्रदेश से सटे अन्य राज्यों में जहां अंतर है वहां किसान डीजल के लिए भी मारे मारे फिर रहे हैं। फसलों की कीमतों पर जल की कमी के बाद डीजल की कीमतों की मार और सबसे ऊपर डीएपी न मिलने का बुखार किसानों के लिए आफत बन गया है। धान की खेती वाले इलाकों में किसान फसलों की बुवाई के लिए महंगे डीजल और डीएपी जैसी किल्लतों को लेकर हलकान है। सरकार की आपात स्थितियों के लिए प्रीपोजिसनिंग जैसी व्यवस्था भी पूरी तरह से फेल हो गई है। पछेती बरसात से दो दो बार सरसों की बिजाई के चलते डयौढ़े डीजल के खर्चे ने किसान की हालत पतली कर दी है। सरकार ने उप चुनावों के नतीजों के बाद थोड़ी कीमतें गिराई हैं लेकिन सरसों बोने वाले सभी किसानों को पंजाब, राजस्थान, गुजरात और उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में महंगे डीजल से ही बुवाई करनी पड़ी।

डीजल की कीमतों ने किसानों की जुताई, बुवाई और सिंचाई का खर्चा डयौढ़ा कर दिया है। अनेक किसानों को 1200 रुपए का डीएपी का बैग इस बार 1600 तक का खरीदना पड़ा। इस बार यूपी का ज्यादातर डीएपी राजस्थान चला गया। यूपी में सरसों कम बोई जाती है। इधर राजस्थान में किसानों को अक्टूबर माह में हुई बरसात के कारण फसल दोबारा बोनी पड़ी। इसके चलते खाद की ज्यादा जरूरत हुई। पछेती बरसता के कारण सरसों का क्षेत्रफल भी बढ़ना शुभ संकेत है लेकिन खेती को समेटने की अफरा तफरी में किसान का दिपावली के त्योहर से पूर्व ही दिवाला निकल गया। सच ही है बगैर डीजल के न तो ट्रैक्टर चलेगा, न खाद लाने वाले ट्रक, न बिजली के अभाव में कारखाने। फिर डीजल भी हर माईने में जरूरी है। डीजल में भी जीवन है। कोरोना महामारी के बाद फसलों की बेकदरी से आहत किसान का डीजल की कीमतों ने दम निकाल दिया है। सरकार को इस दिशा में समय रहते ठोस कदम उठाने की रणनीति बनानी चाहिए ताकि किसानों को सही माईने में समय से राहत मिल सके।

दिलीप यादव
मेरी खेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
(संरक्षक मार्गदर्शक)

डॉ. एमसी शर्मा,
सेवानिवृत्त निदेशक एवं
कुलपति आईवीआरआई इज्जतनगर

प्रो. ए पी. सिंह
पूर्व कुलपति वेटरनरी
विश्वविद्यालय मथुरा

डॉ.एस.के.गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ.ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण
(सेवानिवृत्त) उत्तर प्रदेश

डॉ. उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय कुम्हेर
भरतपुर राजस्थान

श्री सुधीर अग्रवाल
(प्रगतिशील किसान)

दिलीप यादव
(विशेषज्ञ,मेरीखेती)

तेजपाल सिंह
(प्रगतिशील किसान)

कृष्ण पाठक
(विशेषज्ञ,मेरीखेती)

गेंदा के फूल की खेती की सम्पूर्ण जानकारी

खेती-किसानी का जब जिक्र आता है। हमें गांव में बसने वाला उस असली किसान का चेहरा सामने नजर आता है। जो ओस-पाला, सर्दी, प्रचण्ड धूप, अखण्ड बरसात की परवाह किये बिना 24 घंटे सातों दिन अपने खून-पसीने से अपने खेतों को सींच कर अपनी फसल तैयार करता है। उसकी इस त्याग तपस्या का क्या फल मिलता है? शायद ही कोई जानता होगा। किसान का दर्द केवल किसान ही जान सकता है। इस हाड़ तोड़ मेहनत के बदले में किसान को केवल दो जून की रोटी ही नसीब हो पाती है। इसके अलावा किसान को किसी तरह के काम-काज की जरूरत होती है तो उसे कर्ज ही लेना पड़ता है। एक बार कर्ज के जाल में फंसने वाला किसान पीढ़ियों तक इससे बाहर नहीं निकल पाता है।

किसान की भूमिका : -

1.देश की अर्थव्यवस्था में किसान बहुत बड़ी भूमिका होती है। वह भी भारत जैसे कृषि प्रधान देश में तो किसान अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। रीढ़ पूरे शरीर का भार उठाती है, उसे मजबूत करना चाहिये। क्या भारत में इस रीढ़ (किसान की) की पर्याप्त देखभाल हो रही है, शायद नहीं।

2.इसका ताजा उदाहरण हम कोविड-19 यानी कोरोना महामारी का ले सकते हैं। इस महामारी में जब सारे लोग अपनी जान बचाकर अपने-अपने घरों में छिप गये लेकिन किसान के जीवन में और कड़े दिन आ गये।

3.कोरोना की परवाह किये बिना अपने खेतों में दोगुनी मेहनत करनी पड़ी ताकि देश के लोगों की जान बचाई जा सके। लेकिन इस दुखियारे किसान की किसी ने भी सुधि नहीं ली।

4.कोरोना योद्धाओं में डॉक्टरों, नर्स, पैरामेडिकल स्टाफ, पुलिस कर्मी, सुरक्षा बल के कर्मचारियों, सफाई कर्मियों, मीडिया कर्मियों एवं समाजसेवियों का नाम लिया जाता है और उन्हें कोराना योद्धा की उपाधि देकर उनका गुणगान किया जाता है लेकिन जब सारे कल-कारखाने बंद हो गये थे तब जिस किसान ने देश की अर्थव्यवस्था को संभाले रखा, उस किसान को किसी ने एक बार भी कोरोना योद्धा, अन्नदाता या ग्राम देवता तक कह कर नहीं पुकारा।

किसानों की दशा खुद किसान को ही सुधारनी होगी। इसके लिए अपने पैरों को और मजबूत करना होगा। इस काम के लिए किसान को देश की अर्थव्यवस्था के साथ ही अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत करना होगा। इसके लिए किसान को परम्परागत खेती की जगह आधुनिक व उन्नत खेती तथा आर्थिक स्थिति मजबूत करने में सहायक लीक से हटकर वे फसले लेनी होंगी जो कम समय और कम लागत में अधिक से अधिक आमदनी दे सकतीं हों। इस तरह की फसलों में गेंदा के फूल की खेती भी उनमें से एक है। तो आइये जानते हैं गेंदा के फूल की खेती की सम्पूर्ण जानकारी।

गेंदा का फूल का महत्व : -

भारतीय समाज में गेंदा के फूल का बहुत अधिक महत्व है। भारतीय समाज में होने वाले प्रत्येक सामाजिक व धार्मिक कार्यो में गेंदे के फूल की बहुत अधिक मांग होती है। प्रत्येक साल में दो बार नवरात्र, दीवाली, दशहरा, बसंत पंचमी, होली, गणेश चतुर्थी, शिवरात्रि सहित अनेक छोटे-मोटे धार्मिक आयोजन होते ही रहते हैं। इसके अलावा प्रत्येक भारतीय घर में और व्यावसायिक संस्थानों में प्रतिदिन पूजा-अर्चना होती है जिसमें गेंदा के ताजे फूलों का इस्तेमाल किया जाता है। इसके अलावा सामाजिक कार्यो जन्म दिन की पार्टी हो, शादी, व्याह हो, मुंडन व यज्ञोपवीत कार्यक्रम हो, शादी की सालगिरह हो, व्यवसायिक संस्थानों के स्थापना दिवस हो, नये संस्थान का उद्घाटन हो, कोई प्रतियोगिता हो। इन सभी कार्यक्रमों मुख्य द्वार, मंडप, स्टेज आदि की साज-सजावट के साथ माल्यार्पण, पुष्पहार व पुष्पार्पण आदि में गेंदे के फूल का इस्तेमाल बहुतायत में किया जाता है।

किस्में और पैदावार के स्थान : -

गेंदे के फूल के आकार और रंग के आधार पर मुख्य दो किस्में होतीं हैं। एक अफ्रीकी गेंदा होता है और दूसरा फ्रेंच गेंदा होता है। फ्रेंच गेंदे की किस्म का पौधा अफ्रीकी गेंदे के आकार से छोटा होता है। इसके अलावा भारत में पैदा होने वाली गेंदे की किस्में इस प्रकार हैं:-

1.पूसा बसंती गेंदा
2.फ्रेंच मैरीगोल्ड
3.अफ्रीकन मैरीगोल्ड
4.पूसा नारंगी गेंदा
5.अलास्का
6.एप्रिकॉट
7.बरपीस मिराक्ल
8.बरपीस हनाइट
9.क्रेकर जैक
10.क्राउन आफ गोल्ड
11.कूपिड
12.डबलून
13.गोल्डन ऐज
14.गोल्डन क्लाइमेक्स
15.गोल्डन जुबली
16.गोल्डन मेमोयमम
17.गोल्डन येलो
18.ओरेंज जुबली
19.येलो क्लाइमेक्स
20.रिवर साइड

किसान की भूमिका : -

इन प्रमुख किस्मों के अलावा अन्य कई किस्में भी हैं, जिनकी खेती जलवायु और मिट्टी के अनुसार अलग-अलग स्थानों पर की जाती है।

अफ्रीकन गेंदे की हाइब्रिड किस्में:
शोबोट, इन्का येलो, इन्का गोल्ड, इन्का ओरेंज, अपोलो, फर्स्ट लेडी, गोल्ड लेडी, थ्रे लेडी, आदि

फ्रेन्च गेंदे की हाइब्रिड किस्में: (डबल)
बोलेरो, जिप्सी डवार्फ डबल, लेमन ड्राप, बरसीप गोल्ड, बोनिटा, बरसीप रेड एण्ड गोल्ड, हारमनी, रेड वोकेड आदि। (सिंगल) टेट्रा रफल्ड रेड, सन्नी,नॉटी मेरियटा आदि।

गेंदे की खेती के लिए मिट्टी व जलवायु : -

वैसे तो गेंदा विभिन्न प्रकार की मिट्टी में पैदा किया जा सकता है लेकिन इसके लिए बलुई दोमट मिट्टी सबसे अच्छी मानी जाती है।जल जमाव वाली मिट्टी इसके लिए अच्छी नहीं होती है। तेजाबी व खारी मिट्टी भी इसके लिये अनुकूल नहीं होती है। गेंदे की खेती के लिए शीतोष्ण और सम शीतोष्ण जलवायु सबसे अच्छी होती है। इसके अलावा भारत की प्रत्येक जलवायु में गेंदे की खेती होती है। पाला गेंदे का दुश्मन है। इससे बचाना जरूरी होता है।

खेती की अवधि : -

गेंदे की खेती बहुत कम समय में होती है। तीन से चार माह में इसकी पूरी खेती होती है। साल भर में गेंदे की खेती तीन बार की जा सकती है। गेंदे की खेती के लिए 15 से 30 डिग्री तापमान सबसे उपयुक्त होता है। 35 डिग्री से अधिक तापमान गेंदे की खेती के लिए नुकसानदायक होता है।

खेत की तैयारी : -

मिट्टी की जुताई अच्छी तरीके से की जानी चाहिये। जब तक खेत की मिट्टी भुरभुरी न हो जाये तब तक उसकी जुताई की जानी चाहिये। आखिरी जुताई के समय रूड़ी की खास व गोबर की खाद को मिलाया जाना चाहिये।

बिजाई का समय : -

गेंदे की फसल साल में तीन बार ली जाती है। प्रत्येक फसल के लिए बीज बुवाई और पौधरोपाई का अलग-अलग समय निर्धारित होता है। साल में गर्मी की फसल के लिए जनवरी-फरवरी के बीच बीज बुवाई का समय होता है।

इसके जब पौध तैयार हो जाती है जिसे फरवरी-मार्च में पौधे की रोपाई की जाती है।

इसके बाद वर्षा ऋतु की फसल के लिए मध्य जून में बीजों की बुवाई की जाती है। इससे तैयार पौधों की रोपाई जुलाई मध्य में की जाती है।

इस तरह से सर्दी की फसल के लिए सितम्बर में बीज की बुवाई होती है और मध्य अक्टूबर में पौधों की रोपाई होती है।

पौधों की रोपाई की मुख्य बातें: -

अच्छी तरह से तैयार क्यारियों के अच्छे पौधों को छांट कर पोपाई करनी चाहिये। पौधों की रोपाई शाम के समय ही की जानी चाहिये। पौधों की जड़ों को अच्छी तरह से मिट्टी से ढक दिया जाना चाहिये। साथ ही पानी का छिड़काव करना चाहिये।

पौधों से पौधों की दूरी: -

अफ्रीकन नस्ल के पौधे काफी घने और बड़े होते हैं। इसलिये इनकी पौधे से पौधे की दूरी 15 गुणा 10 इंच की रखी जानी चाहिये। फ्रेंच पौधों की दूरी कम भी रखी जा सकती है। इस किस्म के पौधों की पौधों से दूरी 8 गुणा 8 या 8 गुणा 6 इंच रखी जानी चाहिये।

सिंचाई: -

गेंदे की फसल 55 से 60 दिन में तैयार हो जाती है और यह फसल एक महीने तक लगातार देती रहती है। कुल मिलाकर तीन महीने में यह फसल पूर्ण हो जाती है। इसके लिए गर्मियों में सप्ताह में दो बार और सर्दियों में 10 दिन में सिंचाई की जानी चाहिये।

पौधों की कटाई छंटाई: -

गेंदे के पौधों की बढ़वार रोकने के लिए जब पौधा बाढ़ पा आये तो उसकी पिचिंग यानी ऊपर से छंटाई कर देनी चाहिये। ताकि पौधा घना तैयार हो उससे फूल अधिक आयेंगे।

उर्वरक प्रबंधन व खरपतवार नियंत्रण: -

गेंदे की खेती के लिए एक हेक्टेयर में 15 से 20 टन गोबर की खाद, 600 किलोग्राम यूरिया, 1000 किलोग्राम सिंगल सुपर फास्फेट और 200 किलोग्राम पोटाश की डाली जानी चाहिये।
खाद का प्रयोग खेत को तैयार करते समय किया जाना चाहिये। उस समय गोबर की खाद, फास्फेट और पोटाश तो पूरे का पूरा मिलाना चाहिये लेकिन यूरिया का एक तिहाई हिस्सा मिलाना चाहिये।

आखिरी जुताई से पहले ही यह पूरी खाद मिट्टी में मिलाना चाहिये। बची हुई यूरिया का पानी देने के समय इस्तेमाल किया जाना चाहिये।
खरपतवार नियंत्रण के लिए मजदूरों से कम से कम दो बार निराई करानी चाहिये। उसके अलावा एनिबेन, प्रोपेक्लोर और डिफेनमिड का इस्तेमाल किया जाना लाभप्रद होता है।

बीमारियां व कीट नियंत्रण: -

गेंदे के पौधे को रेड स्पाइडर माइट नाम का कीड़ा बहुत अधिक नुकसान पहुंचाता है। इसके नियंत्रण के लिए मैलाथियान या मेटासिस्टॉक्स का पानी में घोल कर छिड़काव करें।

चेपा कीड़ा भी खुद तो नुकसान पहुंचाता ही है और साथ में रोग भी फैलाता है। इसके नियंत्रण के लिए डाईमैथेएट (रोगोर) या मैटासिस्टॉक्स का छिड़काव करें। एक बार में कीट नियंत्रण में न आयें तो दस दिन बाद दोबारा छिड़काव करायें।

आर्द्र गलन नामक गेंदे के पौधों में बीमारी लगती है। इसकी रोकथाम के लिए कैप्टान या बाविस्टिन के घोल का छिड़काव करें।

धब्बा व झुलसा रोग से बढ़वार रुक जाती है। इसके नियंत्रण के लिए डायथेन एम के घोल का छिड़काव प्रत्येक पखवाड़े में करें।

पाउडरी मिल्डयू नामक बीमारी से पौध मरने लगता है। इसकी रोकथाम घुलने वाली सल्फैक्स का या कैराथेन 40 ईसी का छिड़काव करायें।

फूलों की तुडाई व पैकिंग आदि: -

फूलों की तुड़ाई ठण्डे मौसम में यानी सुबह अथवा शाम को सिंचाई के बाद तोड़ें। इनकी पैकिंग करके मार्केट में भेजें। अफ्रीकन गेंदे से प्रति हेक्टेयर 20-22 टन तथा फ्रेंच पौधे से 10 से 12 टन फूल मिलता है।

जानिए चने की बुआई और देखभाल कैसे करें

चने की दाल, बेसन, हरे चने, भीगे चने, भुने चने, उबले चने, तले चने की बहुत अधिक डिमांड हमेशा रहती है। इसके अलावा चने के बेसन से नमकीन व मिठाइयां सहित अनेक व्यंजन बनने के कारण इसकी मांग दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। इससे चने के दाम भी पहले की अपेक्षा में काफी अधिक हैं। किसान भाइयों के लिए चने की खेती करना फायदे का सौदा है।

कम मेहनत से अधिक पैदावार : -

चने की खेती बंजर एवं पथरीली जमीन पर भी हो जाती है। इसकी फसल के लिए सिंचाई की भी अधिक आवश्यकता नहीं होती है। न हीं किसान भाइयों को इसकी खेती के लिए अधिक मेहनत ही करनी पड़ती है लेकिन इस की खेती की निगरानी अवश्य ही अन्य फसलों की अपेक्षा अधिक करनी होती है। आइये जानते हैं कि चने की बुआई किस प्रकार से की जाती है।

असिंचित क्षेत्रों में होती है अधिकांश खेती : -

रबी के सीजन की यह फसल असिंचित क्षेत्रों में अधिक की जाती है जबकि सिंचित क्षेत्रों में चने की खेती कम की जाती है। सिंचित क्षेत्र में काबुली चने की खेती अधिक की जाती है। शरदकालीन फसल होने की वजह से से इसकी खेती कम वर्षा वाले तथा हल्की ठंडक वाले क्षेत्रों में की जा सकती है। चने की खेती के लिए दोमट व मटियार भूमि सबसे उत्तम मानी जाती है लेकिन दोमट, भारी दोमट मार, मडुआ, पडुआ, पथरीली, बंजर भूमि पर भी चने की खेती की जा सकती है। काबुली चना के लिए अच्छी भूमि चाहिये। दक्षिण भारत में मटियार दोमट तथा काली मिट्टी में काबुली चने की फसल की जाती है। इस तरह की मिट्टी में नमी अधिक और लम्बे समय तक रहती है। ढेलेदार मिट्टी में भी देशी चने की फसल ली जा सकती है। इसलिये देश के सूखे पठारीय क्षेत्रों में चने की खेती अधिकता से की जाती है। चने की खेती वाली जमीन के लिए यह देखना होता है कि खेत में पानी तो नहीं भरा रहता है। जलजमाव वाले खेतों में चना की खेती नहीं की जा सकती है। ढलान वाले खेतों में भी चने की खेती की जा सकती है। खेत को तैयार करने के लिए किसान भाइयों को चाहिये कि पहली बार जुताई मिट्टी को पलटने वाले हल से करनी चाहिये। उसके बाद क्रास जुताई करके पाटा लगायें। चने की फसल के बचाव हेतु दीपक एवं कटवर्म के रोधी कीटनाशक का इस्तेमाल अंतिम जुताई के समय करें। उस समय हैप्टाक्लोर चार प्रतिशत या क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत अथवा मिथाइल पैराथियोन 2 प्रतिशत अथवा एन्डोसल्फॉन 1.5 प्रतिशत चूर्ण को 25 किलो मिट्टी में में अच्छी प्रकार से मिलाएं फिर खेत में फैला दें।

बुआई कब करें : -

चने की बुआई के समय की बात करें तो उत्तर भारत में चने की बुआई नवम्बर के प्रथम पखवाड़े में होती है। वैसे देश के मध्य भाग में इससे पहले भी चने की बुआई शुरू हो जाती है। सिंचित क्षेत्र में चने का बीज प्रति हेक्टेयर 60 किलो तक लगता है। काबुली चना का बीज 80 से 90 किलो प्रति हेक्टेयर लगता है तथा छोटे दानों वाली चने की किस्मों की खेती में असिंचित क्षेत्र के लिए 80 किलो तक बीज बुआई में लगता है।

अधिक पैदावार लेने के लिए तथा पछैती फसल के लिए 20 से 25 प्रतिशत तक अधिक बीज का उपयोग करना होगा।

चने की खेती को अनेक प्रकार के कीट व रोग नुकसान पहुंचाते हैं। इस नुकसान से पहले चने की बुआई से पहले बीज का उपचार व शोधन करना होगा। किसान भाइयों सबसे पहले चने के बीज को फफूंदनाशी, कीटनाशी और राजोबियम कल्चर से उपचारित करें। चने की खेती को उखटा व जड़ गलन रोग से बचाव करने के लिए बीज को कार्बेन्डाजिम या मैन्कोजेब या थाइरम की 2 ग्राम से प्रतिकिलो बीज को उपचारित करें। दीपक व अन्य भूमिगत कीटों से बचाने के लिए क्लोरोपाइरीफोस 20 ईसी या एन्डोसल्फान 35 ईसी की 8 मिलीलीटर मात्रा से प्रतिकिलो बीज को उपचारित करें। इसके बाद राइजोबियम कल्चर के तीन व घुलनशील फास्फोरस जीवाणु के तीन पैकेटों से बीजों को उपचारित करें। बीज को उपचारित करने के लिए 250 ग्राम गुड़ को एक लीटर पानी में गर्म करके घोले और उसमें राइजोबियम कल्चर व फास्फोरस के घुलनशील जीवाणु को अच्छी प्रकार से मिलाकर बीज उपचारित करें। उपचार करने के बाद बीजों को छाया में सुखायें।

किसान भाई चने की बुआई करते समय पौधों का अनुपात सही रखें तो फसल अच्छी होगी। अधिक व कम पौधों से फसल प्रभावित हो सकती है। सही अनुपात के लिए बीज की लाइन से लाइन की दूरी एक से डेढ़ फुट की होनी चाहिये तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर होनी चाहिये। बारानी फसल के लिए बीज की गहराई 7 से 10 सेंटीमीटर अच्छी मानी जाती है और सिंचित क्षेत्र के लिए ये गहराई 5 से 7 सेंटी मीटर ही अच्छी मानी जाती है।

चने की खेती की देखभाल कैसे करें : -

सबसे पहले किसान भाइयों को चने की खेती की बुआई के बाद खरपतवार नियंत्रण पर ध्यान देना होगा क्योंकि खरपतवार से 60 प्रतिशत तक फसल खराब हो सकती है। बुआई के तीन दिन बाद खरपतवार नासी डालें। उसके 10 दिन बाद फिर खेत का निरीक्षण करें यदि खरपतवार दिखता है तो उसकी निराई गुड़ाई करें। इस दौरान पौधों की उचित दूरी का अनुपात भी सही कर लें। अधिक घने पौधे हों तो पौधों को निकालकर उचित दूरी बना लें।

साथ ही गुड़ाई कर लें ताकि चने के पौधों की जड़ें मजबूत हो जायें।

सिंचाई प्रबंधन : -

चने की फसल का अधिक पानी भी दुश्मन होता है। अधिक पानी से पौधों की बढ़वार अधिक लम्बी हो जाती है, जिससे चने कम आते हैं और हवा आदि से पेड़ गिरकर नष्ट भी हो जाते हैं। इसके अलावा खेत में यदि पानी भरता हो तो बरसात होने के समय सावधानी बरतें और जितनी जल्दी हो सके पानी को खेत से निकालें। चने की फसल में बहुत जरूरत होने पर एक सिंचाई कर दें। यदि वर्षा हो जाये तब जमीन की नमी को परखें उसके बाद ही सिंचाई करें।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन : -

आम तौर पर चने की खेती के लिए 40 किलो फास्फोरस, 20 किलो पोटाश, 20 किलो
गंधक, 20 किलो नाइट्रोजन का इस्तेमाल किया जाता है। जिन क्षेत्रों की मिट्टी में बोरान अथवा मोलिब्डेनम की मात्रा कम हो तो वहां पर किसान भाइयों को 10 किलोग्राम
बोरेक्स पाउडर या एक किलो अमोनियम
मोलिब्डेट का इस्तेमाल करना चाहिये। असिंचित क्षेत्रों में नमी में कमी की स्थिति में 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव फली बनने के समय करें।

कीट नियंत्रण के उपाय करें : -

चने की फसल में मुख्य रूप से फली छेदक कीट लगता है। पछैती फसलों में इसका प्रकोप अधिक होता है। इसके नियंत्रण के लिए इण्डेक्सोकार्ब, स्पाइनोसैड, इमाममेक्टीन बेन्जोएट में से किसी एक का छिड़काव करें। नीम की निबौली के सत का भी प्रयोग कर सकते हैं। इसके अलावा दीमक, अर्द्धकुण्डलीकार, सेमी लूपर कीट लगते हैं। इनका उपचार समय रहते करना चाहिये।

रोग एवं रोकथाम : -

1.चने की खेती में उकठा या उकड़ा रोग लगता है। यह एक तरह का फफूंद है और यह मिट्टी या बीज से जुड़ी बीमारी है। इस बीमारी से पौधे मरने लगते हैं। इससे बचाव के लिए समय पर बुआई करें। बीज को गहराई में बोयें।

2.ड्राई रूट रॉट का रोग मिट्टी जनित रोग है। इइस बीमारी के प्रकोप से पौधों की जड़ें अविकसित एवं काली होकर सड़ने और टूट जाती है। इस तरह से पूरा पौधा ही नष्ट हो जाता है। बाद में पौधा भूसे के रूप में बदल जाता है।

3.कॉलर रॉट रोग से पौधे पीले होकर मर जाते हैं। यह रोग बुआई के डेढ़ माह बाद ही लगना शुरू हो जाता है। कांबूडाजिम के या बेनो. मिल के घोल से छिड़काव करें।

इसके अलावा चांदनी, धूसर फफूंद, हरदा रोग, स्टेम फिलियम ब्लाइट, मोजेक बौना रोग चने की फसल को नुकसान पहुंचाती है।

जानिए मटर की बुआई और देखभाल कैसे करें

मटर रबी सीजन की प्रमुख फसल है। प्रमुख सब्जी व दलहन की फसल होने के कारण मटर का बहुत अधिक महत्व है। अगैती फसल की मटर बाजार में काफी महंगी बिकती है। किसान भाइयों को चाहिये कि अगैती फसल की खेती करके पहले मार्केट में मटर की फलियों को लाकर बेचें। इससे काफी अधिक लाभ होता है।

मटर की बुआई किस प्रकार की जाती है?: -

नम शीतोष्ण जलवायु वाले क्षेत्रों में मटर की खेती की जाती है। इसलिये हमारे देश में रबी के सीजन में सर्दियों के मौसम में मटर की खेती अधिकांश क्षेत्रों में की जाती है। इसकी खेती की बुआई के समय 20 से 24 डिग्री का तापमान होना चाहिये तथा फसल की पैदावार के लिए 10 से 20 डिग्री का तापमान होना चाहिये। मटर की खेती के लिए मटियार दोमट तथा दोमट भूमि सबसे उत्तम होती है। सिंचित क्षेत्र में बलुई दोमट में भी मटर की खेती की जा सकती है। मटर की खेती के लिए खरीफ की फसल के बाद खेत की जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करनी चाहिये। उसके बाद दो तीन जुताई करके मिट्टी के ढेले फोड़ने के लिए पाटा लगाना चाहिये। मिट्टी एकदम भुरभुरी हो जानी चाहिये। खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिये। यदि खेत में नमी न हो तो पलेवा करके बुआई करनी चाहिये। मटर की अगैती फसल का समय 15 नवम्बर तक माना जाता है। इसके बाद भी पछैती मटर की खेती की जा सकती है। पहाड़ी क्षेत्र में अच्छी किस्म की मटर की बुआई एक माह पहले ही शुरू हो जाती है। मध्यम किस्म की मटर की बुआई नवम्बर में ही होती है। इसी तरह पहाड़ी व मैदानी क्षेत्रों में बुआई नवम्बर तक होता है। बुआई से पहले मटर के बीज का उपचार किया जाना बहुत जरूरी होता है। बीजों का उपचार राइजोबियम से करना चाहिये। राजोबियम कल्चर से बीज को उपचारित करना चाहिये। बीजों को उपचारित करने के लिए 50 ग्राम गुड़ और 2 ग्राम गोंद को एक लीटर पानी में घोल कर गर्म करके मिश्रण तैयार करें। उसे ठंडा होने दे जब ये घोल ठंडा हो जाये तो उसमें राइजोबियम कल्चर को मिलाकर अच्छी तरह मिला कर उससे उपचारित करें। इस तरह उपचारित करने से पहले बीजों का शोधन कर लेना चाहिये। शोधन करने के लिए दो किलो थायरम और एक किलो कार्बन्डाजिम मिलाकर बीजों का उपचार करें। बीजों को छाया में सुखायें। जब बीज का उपचार और शोधन हो जाये तब बुआई करें।

बुआई के लिए 70 से 80 किलोग्राम बीज प्रति हैक्टेयर पर्याप्त होता है। यदि पछैती फसल की खेती करनी है तो उसमें आपको 100 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होगी। देशी हल या सीड ड्रिल पद्धति से बुआई करनी चाहिये। किसान भाइयों को चाहिये कि लाइन से लाइन की दूरी एक फुट से डेढ़ फुट की रखें। पौधे से पौधे की दूरी 5 से 7 सेंटीमीटर रखनी चाहिये। बीज की गहराई 4 से 7 सेंटीमीटर रखनी चाहिये।

मटर की खेती की देखभाल ऐसे करें : -

बुआई के बाद सबसे पहले क्या करें, किसान भाइयों को चाहिये कि मटर की खेती में सबसे पहले खरपतवार का नियंत्रण करना चाहिये। बुआई के एक सप्ताह बाद ही खेत की निगरानी करनी चाहिये। यदि खरपतवार अधिक दिख रहा हो तो उसका निदान करने का प्रयास करना चाहिये। खेत की निराई गुड़ाई करने के साथ ही पौधों की दूरी को भी मैनटेन करना चाहिये। यदि आवश्यकता से अधिक बीज गिर गया है और पौधे पास पास उग आये हैं तो उनकी छंटाई करनी चाहिये।

सिंचाई का प्रबंधन : -

मटर की फसल बहुत नाजुक होती है और सर्दी के मौसम में होती है। इसलिये इसकी सिंचाई का विशेष प्रबंधन करना चाहिये। शरदकालीन वर्षा वाले क्षेत्रों में मटर की खेती के लिए 2 से 3 सिंचाई जरूरी बताई गई हैं। पहली सिंचाई एक से डेढ़ महीने के बाद की जानी चाहिये। दूसरी सिंचाई फलियों के आने के समय की जानी चाहिये। इस बीच यदि क्षेत्र में पाला पड़ता हो तो उससे पहले मटर के खेत में सिंचाई करनी होती है। अंतिम सिंचाई मटर के दाने पुष्ट होने के समय करनी चाहिये।

खरपतवार नियंत्रण कैसे करें : -

मटर की फसल की निराई व गुड़ाई करके खरपतवार का नियंत्रण किया जाता है। इससे मटर के पौधों की जड़ मजबूत होती है तथा पौधे में शाखाएं विकसित होती हैं जिससे पैदावार बढ़ जाती है। निराई गुड़ाई के अलावा मटर की खेती के खरपतवार का नियंत्रण रसायनों से भी किया जा सकता है। खरपतवार नियंत्रण के लिए ढाई से तीन लीटर पैण्डीमैथलीन प्रति हेक्टेयर बुआई के बाद तीन दिन में 500 लीटर पानी में मिलाकर उसका छिड़काव करना चाहिये। किसान भाई मेट्रीव्यूजीन और डब्ल्यूपी मिलाकर बुआई के बाद एक पखवाड़े में छिड़काव करें।

मटर की फसल में लगने वाले रोग और रोकथामें: -

मटर की फसल में कई रोग लगते हैं। किसान भाइयों को समय पर इन रोगों को उपचार करना चाहिये।

1.चूर्णी फफूंद रोग से फसल को सबसे ज्यादा नुकसान होता है। नमी के समय यह रोग मटर की फसल में तेजी से लगता है। इस रोग के लगने से तने व पत्तियों पर सफेद चूर्ण इकट्ठा हो जाता है। इस रोग के दिखने के बाद किसान भाइयों को चाहिये कि डाइनोकप 48 प्रतिशत ईसी की 400 मिलीलीटर मात्रा को 1000 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर छि. ड़काव करें। एक बार छिड़काव से रोग न समाप्त हो तो दो तीन बार 15-15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिये।

2.मृदुरोमिल फफूंद की बीमारी मटर के पौधों में पत्तियों की निचली सतह पर लगती है। इससे फसल को बहुत नुकसान होता है। इसके नियंत्रण के लिए 3 किलोग्राम सल्फर 80 प्रतिशत डब्ल्यूपी या डाइनोकैप 48 प्रतिशत ईसी की दो लीटर मात्रा को 1000 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करनी चाहिये।

कीट प्रकोप और रोकथाम : -

1.फली बेधक कीट के रोग लगने से मटर की फसल में कीड़े लगते हैं जो मटर की फलियों और दानों को खा जाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए मेलाथियान दो मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिये।

2.चेपा यानी लीफ माइनर कीट लगे के कारण पत्तियों पर सफेद रंग की धारियां दिखाई लगने लगतीं हैं। चेपा तने व पत्तियों का रस चूस कर नुकसान पहुंचाते हैं। इनकी रोकथाम के लिये मोनोक्रोटोफॉस 3 मिलीलीटर को प्रति लीटर पानी में मिलाकर घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये।

3.तना मक्खी का प्रकोप अगैती किस्म की मटर की फसल में अधिक होता है। यह कीट पौधों की बढ़वार को पूरी तरह से रोक देता है। इस रोग का नियंत्रण करने के लिए कार्बोफ्यूरान 3 जी नामक रसायन को 10 किलोग्राम की दर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करना चाहिये।

4.पत्ती सुरंगकः इस कीट का प्रकोप दिसम्बर माह में देखा जाता है। यह कीट मार्च तक सक्रिय रहता है। यह कीट पत्तियों में सुरंग बना कर रस चूसता रहता है। इसके नियंत्रण के ए मेटासिस्टौक्स 26 ईसी की एक लीटर की मात्रा को 1000 लीटर पानी में मिलाकर घोल बनायें और उसका छिड़काव करें। जरूरत के अनुसार बार बार छिड़काव करते रहें।

5.फल बेधक कीटः यह कीट फलियों में छेद करके दानों को खा जाती हैं। इसका अधिक होने से पूरी फसल बरबाद हो सकती है। इस रोग की रोकथाम करने के लिस किसान भाइयों को मोनोक्रोटोफॉस 36 ईसी की 750 मिली लीटर मात्रा को 600 से 700 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। एक बार में लाभ न मिले तो इसका छिड़काव जल्दी-जल्दी करें।

पशुपालन के लिए 90 फीसदी तक मिलेगा अनुदान

दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए जरूरी दुधारू पशुओं का पालन करने वाले किसानों को सरकार की ओर से 25 से 90 फीसदी तक छूट प्रदान की जा रही है। उद्देश्य यही है कि इस योजना का लाभ लेकर किसान खेती के साथ पशुपालन की दिशा में भी आगे आएं। यह योजना हरियाणा पशुपालन एवं डेयरी विभाग ने सरकार की मंशा के अनुरूप शुरू की है। प्रदेश में प्रति व्यक्ति दुग्ध उत्पादन एवं उपलब्धता को बढ़ाने के लिए यह प्रयास किए जा रहे हैं। इसके माध्यम से बेरोजगार युवाओं को रोजगार देने की भी सरकार की मंशा है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार विभाग द्वारा हाईटेक मिनी डेयरी योजना के तहत सामान्य वर्ग के पशुपालक 4, 10, 20 तथा 50 दुधारू पशुओं की डेयरी स्थापित कर सकते हैं। विभाग द्वारा 4 व 10 दुधारू पशुओं (भैंसवंशीय) की डेयरी स्थापित करने वाले व्यक्तियों को 25 प्रतिशत सब्सिडी दी जाएगी। इसी प्रकार, 20 व 50 दुधारू पशुओं की डेयरी पर ब्याज की सब्सिडी देने का प्रावधान दिया गया है। इस योजना के तहत अनुसूचित जाति से जुड़े व्यक्तियों के लिए 2ध्3 दुधारू पशुओं की डेयरी स्थापित करने तथा सूअर पालन के लिए 50 प्रतिशत सब्सिडी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि भेड़ या बकरियों की डेयरी करने वाले व्यक्तियों को 90 प्रतिशत सब्सिडी दी जाएगी। डेयरी पालन का व्यवसाय करने के इच्छुक व्यक्तियों को सरल पोर्टल पर पंजीकरण करना होगा। पंजीकरण करते समय परिवार पहचान-पत्र, आधार कार्ड, पैन कार्ड, बैंक पासबुक, कैंसल चौक तथा बैंक की एनओसी अपलोड करनी होगी। विभाग द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए किसी भी कार्य दिवस में विभाग के निकटतम कार्यालय से संपर्क स्थापित किया जा सकता है।

ज्वार की खेती से पाएं दाना और चारा

ज्वार को ज्यादा तादाद में किसान चारे के लिए उगाते हैं लेकिन कई इलाकों में इसकी खेती दाने के लिए भी की जाती है। ज्वार की खेती के लिए 6 से 8.30 पीएच वाली मिट्टी उपयुक्त रहती है। उचित जल निकासी, बेहतर जल धारण क्षमता वाली उपजाऊ मिट्टी में इसकी खेती श्रेष्ठ रहती है। देसी किस्में कमजोर जमीन में भी हो जाती है। ज्वार ऐसी फसल है जो कम पानी में भी हो जाती है तथा दो-चार दिन अगर पानी भरा भी रहे तब भी यह बची रहती है। ज्वार की खेती उत्तर भारत में खरीफ सीजन में एवं दक्षिण भारत में रबी सीजन में की जाती है। इसलिए ज्वार की मांग साल भर बनी रहती है।

खेत की तैयारी : -

ज्वार की खेती के लिए खेत को कल्टीवेटर एवं हैरो दोनों से जुड़ना चाहिए ताकि मिट्टी भुरभुरी हो जाए। अच्छी फसल के लिए कंपोस्ट खाद का प्रयोग जरूर करना चाहिए। यदि खेत साल में कुछ महीने के लिए खाली रहता हो तो हरी खाद के लिए ढैंचा लगा देना चाहिए। ढैंचा की 60 दिन की फसल को दो ढाई फीट की अवस्था पर खेत में हैरों चलाकर जोत देना चाहिए। यदि सिंचाई के लिए पानी संभव हो तो खेत में पानी लगा देना चाहिए ताकि ढैंचा जल्दी से गल जाए।

ज्वार की उन्नत किस्में : -

मध्यप्रदेश के लिए ज्वार की संकर किस्म सी एस एच 5, 9, 14 एवं 18 उपयुक्त हैं। पुन्ह बीज से जमने वाली ओपी किस्मों में जवाहर ज्वार 741, जवाहर ज्वार 938, एसपीवी 1022, जवाहर ज्वार 1041 एवं एएसआर-1 जैसी अनेक किस्में बाजार में उपलब्ध रहती हैं। उत्तर प्रदेश के लिए सीएचएस 16, 14, 9, सीएसवी 13 एवं 15, वर्षा, मऊ ज1 एवं मऊ टी2 किस्म उपयुक्त हैं। शंकर किस्मों से दाना 38 कुंटल एवं चारा 140 क्विंटल तक प्राप्त हो जाता है।

कम उपजाऊ जमीन के लिए किस्में : -

यूं तो ज्वार की संकर किस्में बेहद अच्छा उत्पादन देने वाली बाजार में मौजूद हैं लेकिन प्रतिकूल परिस्थितियों और कमजोर जमीन में देसी किस्में अच्छा उत्पादन दे जाती हैं। इनमें उज्जैन की उज्जैन है लव कुश, विदिशा, आंवला आदि किस्मों से दाने की उपज 12 से 16 कुंटल एवं चारे की उपज 30 से 40 कुंटल तक मिल जाती है।

उर्वरक प्रबंधन: - बुवाई के समय 50 किलोग्राम नाइट्रोजन 80 किलोग्राम फास्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश संस्तुत की जाती है। नाइट्रोजन की आधी मात्रा ही जुताई के समय डालनी चाहिए बाकी उर्वरक पूरे डाल देने चाहिए।

प्रदूषण नियंत्रण में बेलर की उपयोगिता

फसल अवशेष जलाना एक गंभीर मुद्दा रहा है जो लगभग 149.24 मिलियन टन CO2, 9 मिलियन टन से अधिक कार्बन मोनोऑक्साइड (CO) 0.25 मिलियन टन सल्फर ऑक्साइड (SOX), 1.28 मिलियन टन पार्टिकुलेट मैटर, और 0.07 मिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ता है। काला कोयला। यह पर्यावरण में प्रदूषण के साथ-साथ अक्टूबर-नवंबर की अवधि के दौरान दिल्ली में वार्षिक धुंध के लिए सीधे जिम्मेदार है।

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) और भारत के सर्वोच्च न्यायालय की देखरेख में पिछले चार वर्षों में कृषि अवशेष प्रबंधन उपकरण और किसान सब्सिडी में पर्याप्त निवेश ने सरकार को इस मुद्दे को नियंत्रित करने में काफी मदद की है।

हाल के वर्षों में हैप्पी सीडर, सुपर सीडर, मल्चर और हल सभी सीधे रोपण और मिट्टी में फसल अवशेषों को एकीकृत करने के लिए लोकप्रिय हो गए हैं। हालाँकि, ट्रैक्टर से चलने वाले रेक और बेलर का उपयोग करके आयताकार या गोल बेलों के आकार में कृषि पराली को इकट्ठा करने की विधि कई अतिरिक्त उपयोगों के कारण सबसे अधिक प्रचलित है, विशेष रूप से बिजली बनाने के लिए बॉयलर ईंधन के रूप में।

अब पिछले दो महीनों से बेलर मालिक बायोमास सुविधाओं से गठरी आपूर्ति कीमतों में वृद्धि का अनुरोध कर रहे हैं क्योंकि ईंधन की कीमतों में तेजी से वृद्धि के कारण उनकी उत्पादन लागत में काफी वृद्धि हुई है। कई दौर की बातचीत के बावजूद बेलर ओनर एसोसिएशन और बायोमास प्लांट ओनर्स के बीच गतिरोध बना हुआ है। लंबे समय से चल रहे गतिरोध के परिणाम स्वरूप, कई किसान जो सरकार के सब्सिडी कार्यक्रम के तहत इन बेलरों का अधिग्रहण करना चाहते हैं, उनके पास फसल अवशेष को जलाने के अलावा कोई विकल्प नहीं रह जाएगा, क्योंकि दोनों फसलों के समय में अंतर की कमी है। इस साल बेलिंग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना है जब तक कि हरियाणा और पंजाब की सरकार और कृषि मंत्रालय इस मुद्दे को सुलझाने के लिए तुरंत हस्तक्षेप नहीं करते। ऐसा करने में विफलता न केवल इस वर्ष के संतुलन पर नकारात्मक प्रभाव डालेगी, बल्कि पिछले सभी सरकारी उपायों और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए किए गए निवेशों पर भी नकारात्मक प्रभाव डालेगी।

ट्रैक्टर किसान का साथी

ट्रैक्टर और किसान एक दूसरे के साथी हैं या आप कह सकते है की किसान बिना ट्रैक्टर के अधूरा ही होता है.पुराने समय में लोग हल बैल से खेती करते थे तो सारी जमीं में बुआई नहीं कर पाते थे जिससे की जमीं पड़ी रह जाती थी और उसकी वजह से हम अपने खाद्यान्य के लिए दूसरे देशों पर निर्भर रहते थे.पहले हालत ये थे की एक जोड़ी (दो बैल) बैल रखना ही हो पाता था और जिस किसान के पास तीन से चार जोड़ी बैल होते थे वो आज के किसी 70 हॉर्स पावर ट्रैक्टर से कम नहीं माने जाते थे यानि जिस किसान के पास एक से अधिक बैलों की जोड़ी होती थी वो जमींदार होते थे, पैसे वाले और उन्नत किसानों में उनकी गिनती होती थी. फसल के उत्पादन का आलम ये था की अगर किसी की 100 मन (40 क्विंटल) पैदावार हो जाये तो लोगों में उसका अलग ही सम्मान होता था. बोलते थे " देखो उसका सेकरा पूज गया" यानि उसके पास 100 मन अनाज हो गया.धीरे धीरे समय बदला और आज 100 मन गेंहू 10 बीघे (छोटा बीघा) खेत में ही हो जाते हैं और आज हल बैलों की जगह ट्रैक्टर ने लेली और बड़े से बड़ा काम एक अकेला आदमी करने लगा.

ट्रैक्टर का काम:: -

आज ये कहना की ट्रैक्टर का क्या काम है तो बहुत ही अलग हो जायेगा, आज हम ये कह सकते हैं की क्या काम नहीं कर सकता. आज हर छोटे या बड़े किसान की जरूरत है एक ट्रैक्टर के आने से किसान अब सारी जमीन पर खेती करने लगा है और अब तो जो ग्राम समाज की जमीन पर भी कब्जा करके उसमे भी खेती करने लगा है. कई ऐसे किसान होते है जिन पर हकीकत में जमीन न के बराबर होती है और वैसे उनके पास ग्राम समाज की बहुत जमीन होती है. ट्रैक्टर से आप जुताई , बबाई, पानी , नराई, फसल काटना ,भूसा बनाने से लेकर खेत को समतल करना , मेढ़बंदी करना यानि आप जो सोच सकते है वो काम आप ट्रैक्टर से ले सकते है.

किस किसान के लिए कौन सा ट्रैक्टर : -

वैसे तो आजकल 35 हॉर्स पावर से कम का ट्रैक्टर कोई किसान लेना पसंद नहीं करता लेकिन ट्रैक्टर का चुनाव कई बातों को देख कर करना चाहिए, जैसेः जमीन की मिट्टी, फसल , और कितनी जमीन पर काम करना है.मसलन आपके पास 100 बीघा जमीं है तो आपको 35 से 45 हॉर्स पावर का ट्रैक्टर काम दे देगा. और आपको पानी भी अपने ट्रैक्टर से निकालना है तो आप 20 से 25 हॉर्स पावर तक भी जा सकते हो इसमें आपको ज्यादा खर्चा नहीं पड़ेगा. अगर आपके पास जमीन भी ज्यादा है और आप काम भी उससे ज्यादा लेना चाहते है तो आपको 50 से 60 हॉर्स पावर का ट्रैक्टर लेना होगा जिससे आप कटर, रीपर , रोटाबेटर , और कंप्यूटर मांझा चला सकते हो अगर आप इससे ऊपर भी जाना चाहते हो तो आप कंबाइन और थ्रेड चलना चाहते हो तो आपको 60 हॉर्स पावर के ऊपर का ट्रैक्टर चाहिए होगा. जितने बड़ा हॉर्स पावर उतना ही ज्यादा डीजल का खर्चा. मेरा अपना मानना है की अगर आपका ज्यादा बड़ा काम नहीं है तो आप 35 से 50 हॉर्स पावर का ट्रैक्टर ले सकते है और अपने सारे छोटे बड़े काम कर सकते हैं.

ट्रैक्टर कैसे लें: -ट्रैक्टर आप दो तरह से ले सकते है, आप ज्यादा ट्रैक्टर के बारे में नहीं जानते और 8 से 10 साल तक चिंता मुक्त होना चाहते हैं तो नया ट्रैक्टर ही लें और अगर आप थोड़ी भी जानकारी रखते हैं और कोई छोटी मोटी समस्या आती है और उसको अपने आप भी देख सकते हैं तो आप पुराना ट्रैक्टर भी ले सकते हैं.

लोन कहाँ से मिलेगा: -जैसा की सभी जानते है किसान के पास इतना पैसा नहीं होता की वो नगद पैसा से कृषि यन्त्र खरीद सके तो उसको लोन के लिए जाना ही पड़ता है. ज्यादातर किसान बिचौलियों के चक्कर में आकर प्राइवेट कर्ज ले लेते है जिसे पुराने समय में पूंजीपति के कर्ज में किसान फसता था वही आजकल ये प्राइवेट वाले कर रहे है. किसान को कर्ज देने में सरकार कई योजनाए ला रही है जैसे KCC पर लोन , आप SBI, HDFC, ICICI Bank से भी लोन ले सकते है. कोशिश करें की आप किसी सरकारी बैंक से ही लोन लेकर ट्रैक्टर लें.आजकल बैंक किसान को कृषि यंत्रों पर भी कर्ज दे रही है. आप ज्यादा जानकारी के लिए निचे दिए गए लिंक पर क्लिक करके पाता कर सकते हैं या आप हमारे कमेंट बॉक्स में भी पूछ सकते है हम आपकी पूरी सहायता करने की कोशिश करेंगें.

SBI: https://sbi.co.in/web/agri-rural/agriculture-banking/farm-mechanization-loan/tractor-loan/new-tractor-loan-scheme

सुगंधित धनियां लाए खुशहाली

धनियां मसालों और आमतौर पर हर घर में उपयोग में लाया जाता है। इसके पत्तों की महक किसी भी सब्जी के जायके में चार चांद लगाने का काम करती है। इसमें अनेक औषधीय गुण भी हैं। इसके चलते इसकी खेती बेहद लाभकारी है। इसकी खेती देश के आधे से हिस्से में कम कहीं ज्यादा होती है। इसकी खेती के लिए भी बलुई दोमट मिट्टी अच्छी रहती है। बेहतर जल निकासी वाली जमीन में धनियां लगाया जाना उचित होता है। धनियां को कतर कर बेचना एवं जड़ सहित बेचने की प्रक्रिया मंडियों के अनुरूप अपनाएं।

धनियां की किस्में : -

वर्तमान दौर में किसी भी खेती के लिए उस इलाके के चिए संस्तुत किस्मों का चयन बेहद जरूरी है। राजस्थान के कोटा अदि में धनियां की अच्छी खेती होती है। वहां की किस्में भी कई गर्म इलाकों में बेहद अच्छी सुगंध और उत्पादन दानों दे रही हैं। इसके अलावा गुजरात धनियां 1 व 2, पंत धनियां 1, मोरोक्कन, सिमपो एस 33, ग्वालियर 5365, जवाहर 1, सीएस 6, आरसीआर 4, सिंधु, हरीतिमा, यूडी 20 साहित अनेक किस्में बाजार में मौजूद हैं। किसानों को सलाह दी जाती है कि वह किसी भी नई खेती को करने से पूर्व अपने जनपद के कृषि या उद्यान अधिकारी या कृषि विज्ञान केन्द्रों के विशेषज्ञों से संपर्क करें ताकि उन्हें उचित जानकारी प्राप्त हो सके।

धनियां की खेती के लिए जमीन की सिंचाई कर तैयार करें। इससे पूर्व सड़ी हुई गोबर की खाद खेत में जरूर डालें। धनियां की बिजीाई हेतु 5-5 मीटर की क्यारियां बना लें, जिससे पानी देने में और निराई-गुड़ाई का काम करने में आसानी रहे।

बुवाई का समय : -

धनिया की फसल के लिए अक्टुंबर से नवंबर तक बुवाई का उचित समय रहता है। बुवाई के समय अधिक तापमान रहने पर अंकुरण कम हो सकता है। बुवाई का निर्णय तापमान देख कर करें। क्षेत्रों में पला अधिक पड़ता है वहां धनिया की बुवाई ऐसे समय में न करें, जिस समय फसल को अधिक नुकसान हो।

बीजदर व बीजोपचार : -

धनियां का 15 से 20 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है। बीजोपचार के लिए दो ग्राम कार्बेडाजिम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। बुवाई से पहले दाने को दो भागों में तोड़ देना चाहिए। ऐसा करते समय ध्यान दे अंकुरण भाग नष्ट न होने पाए और अच्छे अंकुरण के लिए बीज को 12 से 24 घंटे पानी में भिगो कर हल्का सूखने पर बीज उपचार करके बोएं। सिंचित फसल में बीजों को 1.5 से 2 सेमी. गहराई पर बोना चाहिए, क्योंकि ज्यादा गहरा बोने से सिंचाई करने पर बीज पर मोटी परत जम जाती हैं, जिससे बीजों का अंकुरण ठीक से नहीं हो पाता हैं।

खरपतवार नियंत्रणें : -

धनिये में शुरूआती बढ़वार धीमी गति से होती हैं इसलिए निराई-गुड़ाई करके खरपतवारों को निकलना चाहिए। सामान्यतः धनिये में दो निराई-गुड़ाई पर्याप्त होती है। पहली
निराई-गुड़ाई के 30-35 दिन पर व दूसरी 60 दिन पर अवश्य करें। खरपतवार नियंत्रण के लिए पेन्डीमिथालीन 1 लीटर प्रति हेक्टेयर 600 लीटर पानी में मिलाकर अंकुरण से पहले छिड़काव करें। ध्यान रखें कि छिड़काव के समय भूमि में पर्याप्त नमी होनी चाहिए और छिड़काव शाम के समय करें।

मेथी की खेती की सम्पूर्ण जानकारी

किसान भाइयों आप मेहनत करने के बाद भी वो चीजें नहीं हासिल कर पाते हो जिनके लिए आप पूरी तरह से हकदार हो। आपने वो कहावत तो सुनी होगी कि हिम्मते मर्दा मद्दे खुदा। जो अपनी मदद करता है, खुदा उसकी मदद करता है। यह बात सही है लेकिन खुदा या ईश्वर साक्षात प्रकट होकर आपकी मदद करने नहीं आयेंगे। इसके बावजूद यदि आप अपने जीवन की तरक्की की बातों को खोजना शुरू कर देंगे तो आपको वो सारे रास्ते मिल जायेंगे जिन्हें आप चाहेंगे। इस विश्वास के साथ आप अपनी मौजूदा माली हालत को देखिये और अपने परिवार की ओर देखिये। उनकी समस्यायें क्या हैं आप खेती करके कितनी जरूरतें पूरी कर पा रहे हैं और कितनी अधूरी रह जा रहीं हैं। इन सभी बातों पर विचार करेंगे तो आपको रास्ता अवश्य दिख जायेगा। चाहे आप फसल का चक्रानुक्रम बढ़ायें अथवा वो फसलें खेतों में पैदा करें जो अब पारंपरिक फसलों से अधिक आमदनी दे सकें। इस बारे में विचार करें। सरकारी और गैर सरकारी विशेषज्ञों से सम्पर्क करें और कम समय में और कम लागत में अधिक आमदनी देने वाली फसलों को पैदा करने की योजना बनायें तो कोई भी शक्ति आपको आगे बढ़ने से नहीं रोक सकती। क्योंकि कहा गया है कि चरण चूम लेतीं हैं खुद चलके मंजिल। मुसाफिर अगर हिम्मत न हारे। इसलिये हिम्मत करके आप व्यापारिक फसलों पर अपना फोकस करें। मेथी ऐसी ही फसल है, जो कम लागत में और कम समय में दोहरा या इससे ज्यादा लाभ देने वाली है। जानिये मेथी की खेती के बारे में।

मेथी के खास-खास गुण : -

मेथी को लिग्यूमनस फेमिली का पौधा कहा जाता है। इसका पौधा झाड़ीदार एवं छोटा ही होता है। मेथी के पौधे की पत्तियां और बीज दोनों का ही इस्तेमाल किया जाता है। मेथी की पत्तियों का साग बनाया जाता है और उसके बीज को मसाले के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा पत्तियों को सुखा कर महंगे दामों पर बेचा जा सकता है। मेथी के बीज को औषधीय प्रयोग किया जाता है। इससे आयुर्वेदिक दवाएं बनतीं हैं। मेथी के लड्डू खाने से शुगर डायबिटीज, ब्लेड प्रेशर कंट्रोल होता है। शरीर के जोड़ों के दर्द व अपच की बीमारी में मेथी के बीज फायदेमंद होता है।

मिट्टी व जलवायुं: -

किसान भाइयों वैसे तो मेथी की खेती प्रत्येक प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है। लेकिन इसके लिए बलुई व रेतीली बलुई मिट्टी सबसे ज्यादा अच्छी होती है। मिट्टी का पीएच मान 6 से 8 के बीच होना चाहिये। मेथी की खेती के लिए ठंडी जलवायु अधिक अच्छी होती है क्योंकि इस के पौधे में अन्य पौधों की अपेक्षा पाला सहने की शक्ति अधिक होती है। किसान भाइयों को इस बात का ध्यान रखना होगा कि मेथी की खेती उन स्थानों पर की जानी चाहिये जहां पर बारिश अधिक न होती है क्योंकि मेथी का पौधा अधिक वर्षा को सहन नहीं कर पाता है। इसलिये जल जमाव वाला खेत भी मेथी की खेती के लिए नुकसानदायक है।

खेत की तैयारी: -

मेथी की खेती करने वाले किसान भाइयों को चाहिये की खेत को तब जुतवायें जब तक मिट्टी भुरभुरी न हो जाये यानी कंकड़ या ढेला न रहे। इसके लिए पाटा का इस्तेमाल करना चाहिये। आखिरी जुताई करने से पहले गोबर की खाद का मिश्रण डालना चाहिये। जिससे खाद मिट्टी में अच्छी तरह से मिल जाये। उसके बाद खेत बिजाई के लिए तैयार हो जाता है। बिजाई के लिए 3 गुणा दो मीटर की समतल बैड तैयार करना चाहिये।

बिजाई का समय व अन्य जरूरी बातें : -

किसान भाइयों आपको बता दें कि मेथी की खेती के लिए बिजाई का समय मैदानी और पहाड़ी इलाकों के लिए अलग-अलग होता है। मैदानी इलाकों में मेथी की बिजाई सितम्बर-अक्टूबर तक हो जानी चाहिये। पहाड़ी इलाकों में मेथी की बिजाई जुलाई व अगस्त के महीने में की जानी चाहिये। इसकी बिजाई हाथों से छींट करके की जाती है। बिजाई करते समय पौधों की दूरी का ध्यान रखना पड़ता है। लाइन से लाइन की दूरी लगभग एक फुट होनी चाहिये। पौधों से पौधों की दूरी किस्म के अनुसार तय की जाती है। बीज को एक इंच तक गहराई में बोना चाहिये। एक एकड़ में लगभग 12 किलोग्राम मेथी के बीजों की जरूरत होती है। बिजाई से पहले मेथी के बीजों को उपचारित करना जरूरी होता है। उपचारित करने के लिए बीजों को बुवाई करने से लगभग 10 घंटे पानी में भिगो देना चाहिये। फंगस व कीट आदि से बचाने के लिए कार्बेनडजिम, डब्ल्यूपी से बीजों को उपचारित करें। इसके साथ एजोसपीरीलियम ट्राइकोडरमा के मिक्स घोल से बीजों का उपचार करने से किसी भी प्रकार की शंका नहीं रहती है।

यदि कोई किसान भाई मेथी की बुवाई ताजा साग बेचने के लिए करना चाहते हैं तो आपको प्रत्येक 8-10 दिन के अंतर से बुवाई करते रहना होगा। मैदानी इलाके में यह बुवाई सितम्बर से लेकर नवम्बर तक की जा सकती है। इसके बाद बीजों के लिए नवम्बर के अंत में बुवाई करके छोड़ देंगे तो आपको अच्छी पैदावार मिल जायेगी।

खाद व रासायनिक उपचार का प्रबंधन: -

मेथी की खेती में खाद और बूस्टर रासायनिक का प्रबंधन बहुत ही लाभकारी होता है। किसान भाई जितना अच्छा इन का प्रबंधन कर लेंगे उतनी ही अच्छी पैदावार ले सकेंगे।

मेथी की खेती में खाद और बूस्टर रासाय. निक का प्रबंधन बहुत ही लाभकारी होता है। किसान भाई जितना अच्छा इन का प्रबंधन कर लेंगे उतनी ही अच्छी पैदावार ले सकेंगे। इसके लिये समय-समय पर आवश्यक उर्वरकों को सही मात्रा में डालना होगा। साथ ही समय-समय पर बूस्टर रासायनिक डोज भी देनी होगी। इससे तेजी से फसल बढ़ती है। बुवाई करने के समय एक एकड़ में 12 किलो यूरिया, 8 किलो पोटेशियम, 50 किलो सुपर फास्फेड और 5 किलो नाइट्रोजन मिलाकर डालनी चाहिये।

पौधों में तेजी से बढ़वार देने के लिए 10 दिनों के बाद ही ट्राइकोटानॉल हारमोन को पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिये। इसके दस दिन बाद एनपीके का समान मिश्रण करके छिड़काव करने से जल्द ही फसल तैयार हो जाती है। अच्छी फसल के लिए डेढ़ महीने के बाद ब्रासीनोलाइड को पानी मिलाकर घोल का छिड़काव करना चाहिये। इसके दस दिन बाद दुबारा इसी तरह के घोल का छिड़काव करने से फसल तेजी से बढ़ती है। पाला व को. हरे से बचाने के लिएथाइयूरिया का छिड़काव करें।

सिंचाई प्रबंधन : -

मेथी की खेती में सिंचाई का प्रबंध करना भी जरूरी होता है। समय-समय पर सिंचाई करने से साग का स्तर काफी अच्छा होता है वरना पौधे कड़े हो जाते हैं फिर उनकी भाजी बेचने योग्य नहीं रह जाती है। बिजाई से पहले ही सिंचाई करनी चाहिये। हल्की नमी के समय ही बिजाई करनी चाहिये ताकि उनका अंकुरन जल्दी हो सके। बिजाई के एक माह बाद सिंचाई करनी चाहिये। उसके बाद मिट्टी के पीएच मान के अनुसार दो महीने के आसपास सिंचाई करनी चाहिये। इसके बाद तीन महीने और चौथे महीने में सिंचाई करनी चाहिये। साग वाली मेथी की खेती में सिंचाई जल्दी-जल्दी करनी चाहिये। इसके अलावा जब पौधे में फूल के बाद फली आने लगती है तब सिंचाई पर विशेष ध्यान देना होता है। क्योंकि पानी की कमी से पैदावार पर काफी असर पड़ सकता है।

खरपतवार नियंत्रण कैसे करें : -

किसान भाइयों किसी भी फसल के लिए खरपतवार का नियंत्रण करना अति आवश्यक होता है। मेथी की खेती में खरपतवार के नियंत्रण के लिए दो बार गुड़ाई-निराई करनी होती है।

पहली गुड़ाई-निराई एक महीने के बाद और दूसरे महीने के बाद दूसरी गुड़ाई निराई की जानी चाहिये। इसके साथ ही खरपतवार के कीट यानी नदीनों की रोकथाम के लिए फ्लूक्लोरालिन, पैंडीमैथालिन का छिड़काव बिजाई एक दो दिनों बाद ही करना चाहये। जब पौधा दस सेंटीमीटर का हो जाये तो उसको बिखरने से रोकने के लिए बांध दें। ताकि छोटी झाड़ी बन सके और अधिक पत्तियां दे सके।

मेथी की उन्नत व लाभकारी किस्में: -

मेथी की खेती के लिए वैज्ञानिकों ने जलवायु और मिट्टी के अनुसार अनेक उन्नत किस्में तैयार की हैं। किसान भाइयों को चाहिये कि वो अपने क्षेत्र की मृदा व जलवायु के हिसाब से किस्मों को छांट कर खेती करेंगे तो अधिक लाभ होगा। इन उन्नत किस्मों में कुछ इस प्रकार हैं:-

कसूरी मेथी: इस किस्म के पौधे की पत्तियां छोटी और हंसिये की तरह होतीं हैं। इस किस्म के पौधे से पत्तियों की 2 से 3 बार कटाई की जा सकती है। इस किस्म की फसल देर से पकती है। इसकी महक अन्य मेथी से अलग और अच्छी होती है। इसकी औसत फसल 60 से 70 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। पूसा अर्ली बंचिंग: मेथी की यह किस्म जल्दी तैयार होने वाली किस्म है। इसकी भी दो-तीन बार कटाई की जा सकती है। इसकी फलियां आठ सेंटीमीटर तक लम्बी होतीं हैं। इसकी फसल चार महीने में पक कर तैयार हो जाती है।

लाम सिलेक्शन: भारत के दक्षिणी राज्यों के मौसम के अनुकूल यह किस्म खोजी गयी है। इसका पौधा झाड़ीदार होता है। साग और बीज के अच्छे उत्पादन के लिये यह अच्छी किस्म है।

कश्मीरी मेथी: पहाड़ी क्षेत्रों के लिए खोजी गयी इस नस्ल की मेथी के पौधे की खास बात यह है कि यह सर्दी को अधिक बर्दाश्त कर लेता है। इसके फूल सफेद रंग के होते हैं। इसकी फसल पकने में थोड़ा अधिक समय लगता है।

हिसार सुवर्णा, हिसार माधवी और हिसार सोनाली: जैसे नाम से ही मालूम होता है कि मेथी की इन किस्मों की खोज हरियाणा के हिसार कृषि विश्वविद्यालय के द्वारा की गयी है। इस किस्मों की खास बात यह है कि इनमें धब्बे वाला रोग नहीं लगता है। बीज व साग के लिए बहुत ही अच्छी किस्में हैं। राजस्थान और हरियाणा में इसकी खेती होती है, जहां किसानों को अच्छी पैदावार मिलती है।

जब तक मिट्टी भुरभुरी न हो जाये यानी कंकड़ या ढेला न रहे। इसके लिए पाटा का इस्तेमाल करना चाहिये। आखिरी जुताई करने से पहले गोबर की खाद का मिश्रण डालना चाहिये। जिससे खाद मिट्टी में अच्छी तरह से मिल जाये। उसके बाद खेत बिजाई के लिए तैयार हो जाता है। बिजाई के लिए 3 गुणा दो मीटर की समतल बैड तैयार करना चाहिये।

बिजाई का समय व अन्य जरूरी बातें : -

किसान भाइयों आपको बता दें कि मेथी की खेती के लिए बिजाई का समय मैदानी और पहाड़ी इलाकों के लिए अलग-अलग होता है। मैदानी इलाकों में मेथी की बिजाई सितम्बर-अक्टूबर तक हो जानी चाहिये। पहाड़ी इलाकों में मेथी की बिजाई जुलाई व अगस्त के महीने में की जानी चाहिये। इसकी बिजाई हाथों से छींट करके की जाती है। बिजाई करते समय पौधों की दूरी का ध्यान रखना पड़ता है। लाइन से लाइन की दूरी लगभग एक फुट होनी चाहिये। पौधों से पौधों की दूरी किस्म के अनुसार तय की जाती है। बीज को एक इंच तक गहराई में बोना चाहिये। एक एकड़ में लगभग 12 किलोग्राम मेथी के बीजों की जरूरत होती है। बिजाई से पहले मेथी के बीजों को उपचारित करना जरूरी होता है। उपचारित करने के लिए बीजों को बुवाई करने से लगभग 10 घंटे पानी में भिगो देना चाहिये। फंगस व कीट आदि से बचाने के लिए कार्बेनडजिम, डब्ल्यूपी से बीजों को उपचारित करें। इसके साथ एजोसपीरीलियम ट्राइकोडरमा के मिक्स घोल से बीजों का उपचार करने से किसी भी प्रकार की शंका नहीं रहती है।

यदि कोई किसान भाई मेथी की बुवाई ताजा साग बेचने के लिए करना चाहते हैं तो आपको प्रत्येक 8-10 दिन के अंतर से बुवाई करते रहना होगा। मैदानी इलाके में यह बुवाई सितम्बर से लेकर नवम्बर तक की जा सकती है। इसके बाद बीजों के लिए नवम्बर के अंत में बुवाई करके छोड़ देंगे तो आपको अच्छी पैदावार मिल जायेगी।

खाद व रासायनिक उपचार का प्रबंधन: -

मेथी की खेती में खाद और बूस्टर रासायनिक का प्रबंधन बहुत ही लाभकारी होता है। किसान भाई जितना अच्छा इन का प्रबंधन कर लेंगे उतनी ही अच्छी पैदावार ले सकेंगे।

हरियाणा में बन रहीं है सेब, फूल और मसाला मण्डी

हरियाणा सरकार किसानों के लिए कई लाभकारी योजनाओं पर काम कर रही है। किसानों को अपनी जिंस बेचने में दिक्कत न हो इस बात को ध्यान में रखते हुए सरकार ने पिंजौर में सेब, गुरुग्राम में फूल एवं सोनीपत में मसाला मण्डी स्थापित कराने की व्यवस्था की है। सूबे के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री जे.पी.दलाल ने कहा कि प्रदेश में नई पौध नर्सरियों को बढ़ाया जाए ताकि बागवानी करने वाले किसानों को फल, फूल व सब्जियों की पौध की समस्या न आए। उन्होंने भावान्तर भरपाई योजना का जिक्र करते हुए बताया कि बाजार में फल एवं सब्जियों की कीमत गिरने पर इस योजना के माध्यम से किसानों के घाटे की भरपाई की जाती है। इसके अन्तर्गत 21 बागवानी फसलों को संरक्षित किया गया है। उनका मूल्य निर्धारित किया गया है। इसके अलावा प्राकृतिक आपदा से भरपाई को 'मुख्यमंत्री बागवानी बीमा योजना' भी चलाई है।

श्री दलाल ने कहा कि किसानों को उनकी पैदावार की ग्रेडिंग, पैकिंग व स्टोरेज तथा कृषि बाजार व उपभोक्ताओं से जोड़ने के लिए 599 किसान उत्पादक समूह बनाये गये हैं। इनसे 77,985 किसानों को जोड़ा है। हमारा लक्ष्य 1000 किसान उत्पादक समूह बनाने का है। कृषि मंत्री ने कहा कि प्रदेश में फल, फूल और सब्जियों को बेचने के लिए किसानों को दूर न जाना पड़े, इसलिए पिंजौर में सेब मण्डी, गुरुग्राम में फूल मण्डी और सोनीपत में मसाला मण्डी स्थापित की जा रही हैं।

5 राज्यों में शहद के एफपीओ का शुभारंभ

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने 26 नवंबर 2020 को नेशनल एग्रीकल्चरल कोऑपरेटिव मार्केटिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (नाफेड) के शहद किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस उद्घाटन कार्यक्रम का ऑनलाइन माध्यम से आयोजन किया गया जिसमें देश के विभिन्न हिस्सों से नए शहद एपीओ, किसानों और एफपीओ ने भाग लिया।

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने 10 हजार एफपीओ बनाने की केंद्र सरकार की योजना के अंतर्गत 5 राज्यों में मधुमक्खी पालकोंध्शहद संग्राहकों के 5 एफपीओ का शुभारंभ गुरुवार को किया। ये एफपीओ मध्य प्रदेश में मुरैना, पश्चिम बंगाल में सुंदरबन, बिहार में पूर्वी चंपारण, राजस्थान में भरतपुर और उत्तर प्रदेश में मथुरा जिले में नाफेड के सहयोग से बने हैं। इस अवसर पर श्री तोमर ने कहा कि 10 हजार नए कृषक उत्पादक संगठन बनने पर छोटे-मझौले किसानों के जीवन में बदलाव आएगा और इनकी आय काफी बढ़ेगी, वहीं "मीठी क्रांति" से दुनिया में भारत का महत्वपूर्ण स्थान बनेगा। केंद्रीय मंत्री श्री तोमर ने कहा कि 10 हजार एफपीओ बनाने की योजना की सफलता के लिए कृषि मंत्रालय ने बहुत अच्छे से तैयारियां कर ली है। आज के इस कार्यक्रम में नाफेड ने अग्रणी भूमिका निभाई है और नाफेड की टीम इस काम को सफलता के सोपान पर पहुंचाएंगी। उन्होंने सभी एजेंसियों से अपील की है कि इस उपक्रम को किसी सरकारी योजना के रूप में नहीं लें, यह स्कीम किसानों को हर तरह से लाभ पहुंचाने वाली है। देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए किसानों की बड़ी आबादी को साथ लेकर व कंधे से कंधा मिलाकर चलना जरूरी है। इस स्कीम से न केवल किसानों की आय बढ़ेगी, बल्कि कृषि उपज का उत्पादन व उत्पादकता भी बढ़ेगी, किसान महंगी फसलों की ओर आकर्षित होंगे, एफपीओ के माध्यम से उन्हें अपनी कृषि उपज का वाजिब मूल्य मिलेगा। एफपीओ प्लेटफार्म किसानों के लिए हर तरह से मददगार होगा और प्रधानमंत्री जी के लक्ष्य को पूर्णता प्रदान करेगा।

श्री तोमर ने कहा कि मधुमक्खी पालन कार्य छोटे किसानों की आमदनी बढ़ाने में बड़ा मददगार साबित हो सकता है। केंद्र सरकार की कोशिश है कि आने वाले कल में यह मीठी क्रांति न केवल सफल हो, बल्कि इस लक्ष्य तक पहुंचे कि दुनिया में शहद की दृष्टि से भारत एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकें। इसके लिए 500 करोड़ रुपये का फंड आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत पैकेज के रूप में दिया गया है, वहीं अनेक अन्य योजनाओं के माध्यम से भी मधुमक्खी पालकों को निरंतर प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री पुरुषोत्तम रूपाला ने कहा कि किसानों की आय दोगुनी करने में एफपीओ का यह कदम मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने कहा कि शहद में अलग-अलग वैरायटी की मांग बढ़ रही है, अब मीठी क्रांति की शुरुआत हो गई है। कार्यक्रम में कृषि मंत्रालय के सचिव श्री सुधांशु पांडेय, नाफेड के एमडी श्री संजीव कुमार चड्ढा, अन्य अधिकारी-कर्मचारी व मधुमक्खी पालक भी शामिल हुए।

60 हजार क्विंटल शहद सीधे उपभोक्ताओं तक पहुंचेगा-: -

भारत सरकार की योजना के अंतर्गत इन पांचों नए एफपीओ से जुड़े लगभग पांच सौ गांवों के 4 से 5 हजार शहद उत्पादकों को इस परियोजना से सीधा लाभ पहुंचेगा। शहद उत्पादकों द्वारा निकाला जाने वाला 60 हजार क्विंटल शहद अब उनके स्वयं के द्वारा ही प्रोसेस करके नाफेड की मदद से उपभोक्ताओं तक पहुंचाया जाएगा, जिससे इनकी आय बढ़ेगी।

एफपीओ के सदस्य संगठन के रूप में अपनी गतिविधियों का प्रबंधन कर सकेंगे, ताकि प्रौद्योगिकी, निवेश, वित्त और बाजार तक बेहतर पहुंच हो सकें। नाफेड अपनी सम्बद्ध संस्था इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीबिजनेस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी) के द्वारा मधुमक्खी पालकों के नए एफपीओ बना रहा हैं।

नैनो यूरिया का ड्रोन से गुजरात में परीक्षण

तरल नैनो यूरिया के कारोबारी उत्पादन करने वाला भारत विश्व का पहला देश बन गया है। गुजरात के भावनगर में केन्द्रीय रसायन एवं उर्वरक मंत्री मनसुख मांडविया की मौजूदगी में गुजरात के भावगन में ड्रोन से नैनो यूरिया के छिडकाव का सफल परीक्षण किया गया। जून में इसका उत्पादन शुरू हुआ और तब से अब तक हमने नैनो यूरिया की 50 लाख से अधिक बोतलों का उत्पादन कर लिया है। उन्होंने बताया कि नैनो यूरिया की प्रतिदिन एक लाख से अधिक बोतलों का उत्पादन किया जा रहा है। इस दौरान मौजूद किसानों के मध्य मंत्री ने कहा कि उर्वरक और दवाओं के परंपरागत उपयोग को लेकर कई तरह की शंकाएं किसानों के मन में रहती हैं। छिड़काव करने वाले के स्वास्थ्य को इससे होने वाले संभावित नुकसान के बारे में भी चिंता व्यक्त की जाती है। ड्रोन से इसका छिड़काव इन सवालों और समस्याओं का समाधान कर देगा। ड्रोन से कम समय में अधिक से अधिक क्षेत्र में छिड़काव किया जा सकता है। इससे किसानों का समय बचेगा। छिड़काव की लागत कम होगी।

उन्होंने नैनो टेक्नोलाजी की खूबी पर चर्चा करते हुए कहा कि इससे यूरिया आयात घटेगा। किसानों को और जमीन को अधिक यूरिया डालने से होन वाले नुकसान से किसान बचेंगे। जमीन की उपज क्षमता में भी लाभ होगा। संतुलित उर्वरक उपयोग से खाद्यान्न गुणवत्ता भी सुधरेगी। यूरिया पर दी जाने वाली सब्जिसडी का बोझ भी कम होगा। इसका उपयोग अन्य जन कल्याणकारी कार्यो में किया जा सकेगा। इस दौरान इफको के प्रतिनिधियों ने किसानों की जिज्ञासा को शांत किया। उन्होंने किसानों को ड्रोन से किए जाने वाले छिडकाव को जीवन रक्षा के लिए बेहद कारगर बताया। इस अवसर पर भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ के अध्यक्ष और इफको के उपाध्यक्ष दिलीप भाई संघानी भी उपस्थित थे।

किसानों के लिए वरदान बनकर आया नैनो लिक्विड यूरिया

किसान भाइयों, आपके लिए बहुत बड़ी खुशखबरी है। आप दुनिया के पहले ऐसे किसान होंगे जो अपनी खेती में यूरिया उर्वरक के इस्तेमाल में कम लागत लगाकर अधिक पैदावार करके आमदनी बढ़ा सकते हैं। क्योंकि भारत के सबसे बड़े किसान हितैषी सहकारी संगठन इफको ने नैनो यूरिया यानी लिक्विड यूरिया की खोज कर दुनियाभर के किसानों को चा. "काया है। इस नैनो यूरिया की खोज करने वाले कृषि वैज्ञानिकों का दावा है कि नैनो यूरिया पारम्परिक यूरिया के इस्तेमाल से होने वाले हानिकारक साइड इफेक्ट को समाप्त करने वाला है।

पारम्परिक यूरिया से उत्पन्न होने वाली समस्याएं: -

45 किलो की सफेद दाने वाली बोरी की यूरिया को पारम्परिक यूरिया कहा जाता है। जहां इस यूरिया की वास्तविक कीमत 900 से 950 रुपये प्रति बोरी पड़ती है। इसमें सरकार द्वारा 700 रुपये की सब्सिडी दी जाती है, इससे यह यूरिया किसानों को 250 रुपये के प्रति बोरी के हिसाब से मिल पाती है। इसी कारण जब किसानों की यूरिया की अधिक जरूरत होती है तब यह बाजार से गायब हो जाती है। कहने का मतलब इसकी कालाबाजारी होती है। कभी कभी तो यह यूरिया 500 रुपये प्रति बोरी तक किसान भाइयों को खरीदनी पड़ती है। नैनो यूरिया ने किसान भाइयों की इस समस्या का समाधान कर दिया है।

नैनो यूरिया कौन-कौन से नुकसान बचायेगी: -

भारतीय खेती की लागत कम करने और अधिक पैदावार देने में नैनो यूरिया काफी प्रभावक. ारी है। कृषि वैज्ञानिकों ने ये दावा किया कि नैनो यूरिया पारम्परिक यूरिया की अपेक्षा काफी कम लगती है क्योंकि पारम्परिक यूरिया जितना खेतों में इस्तेमाल किया जाता है, उसका मुश्किल से 30 से 40 प्रतिशत पौधों के काम आता है। बाकी हवा और मिट्टी में बेकार चला जाता है। इससे किसान भाइयों को अपने खेती के उर्वरक प्रबंधन पर ज्यादा पैसा खर्च करना पड़ता है, जबकि नैनो यूरिया सीधे पौधों तक पहुंचेगी, तो वह कम मात्रा में लगेगी। इससे किसानों को काफी बचत होगी। एक अनुमान में बताया गया है कि नैनो यूरिया के इस्तेमाल से देश में इस्तेमाल होने वाली यूनिया में 50 प्रतिशत तक की बचत होगी।

1.कृषि वैज्ञानिकों ने बताया है कि इस्तेमाल से अधिक बरबाद होने वाली पारम्परिक यूरिया से भारतीय खेती व भारतीय जलवायु को काफी नुकसान पहुंचता है।
2.यूरिया का जो भाग हवा में बरबाद होता है, वो पर्यावरण प्रदूषण बढ़ाता है और हानिकारक ग्रीन हाउस गैसों का कारण बनता है।
3.जो भाग मिट्टी में जाता है वो मिट्टी का स्वास्थ्य खराब करता है। इससे मृदा का पीएच मान गड़बड़ाता है, जिसका सीधा असर खेती और पैदावार पर पड़ता है।
4.इसके अलावा इससे मिट्टी अम्लीय यानी क्षारीय हो जाती है, जिससे कई तरह की उपयोगी फसलों को नहीं लिया जा सकता है।

साथ ही मिट्टी में बरबाद होने वाला यूरिया भूमिगत जल को दूषित करता है। पारम्परिक यूरिया के इन विकारों को दूर करने के लिए नैनो यूरिया की खोज की गयी है।

वैज्ञानिकों की राय: -

दुनिया में नैनो टेक्नोलॉजी के जाने-मानेसा. इंटिस्ट और नैनो यूरिया की खोज करने वाले डॉ. रमेश रालिया ने बताया कि नैनो यूरिया की खोज का काम 2015 से शुरू कर दिया गया था। विभिन्न लैब टेस्टों के बाद नवम्बर 2019 से देश भर के विभिन्न कृषि जलवायु वाले 30 क्षेत्रों के 11000 किसानों के खेतों में विभिन्न प्रकार खेती की लगभग 100 फसलों में इस नैनो यूरिया का लगातार दो साल परीक्षण किया गया। इसके अलावा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद(आईस. ीएआर) के 20 से अधिक संस्थानों और देश के जाने माने कृषि विश्वविद्यालयों में इस नैनो यूरिया का परीक्षण किया जा चुका है। वह पर्यावरण के बारे में बताते हैं कि यूरिया का बहुत बड़ा भाग नाइट्रस ऑक्साइड के रूप में ग्रीन हाउस गैस के रूप में जाता है, जिसे हम नैनो यूरिया से बचा सकते हैं। यूरिया के प्रयोग से हमारी मिट्टी में पीएच संतुलन बिगड़ जाता है। आमोनिया के चलते जमीन अम्लीय यानी एसिडिक हो जाती है, इससे जो आवश्यक पोषक तत्व पौधों को चाहिये वह नहीं मिल पाते हैं। जबकि नैनो यूरिया का मिट्टी के स्वास्थ्य पर कोई असर नहीं पड़ता है।

यूरिया के अधिक प्रयोग से खेती को होने वाले नुकसान: -

1.मृदा स्वास्थ्य के नुकसान और पर्यावरण प्रदूषित होने के कारण मिट्टी की फसल उत्पन्न करने की शक्ति क्षीण हो जाती है।
2.फसलों में बीमारियों और कीटों के प्रकोप का खतरा अधिक बढ़ जाता है।
3.फसलों को पकने में अधिक समय लगता है। देर से तैयार होने वाली फसलों में जहां फसल चक्र प्रभावित होता है। वहीं मौसमी बदलाव से खेतों में खड़ी फसलों के नुकसान की संभावना अधिक रहती है।
4.खेतों में पैदावार कम होती है और फसल की क्वालिटी भी अच्छी नहीं होती है।

नैनो यूरिया की क्या हैं खूबियां: -

1.पारम्परिक यूरिया की प्रति बोरी से दस फीसदी सस्ता है नैनो यूरिया।
2.सब्सिडी रहित होने के कारण नैनो यूरिया आसानी से हर जगह उपलब्ध रहेगा।

4.पारम्परिक यूरिया की अपेक्षा नैनो यूरिया आधी मात्रा ही खेतों में पर्याप्त होगी। इससे किसानों को खेत में आधा ही पैसा लगाना होगा।

5.नैनो यूरिया समय पर पौधों को आवश्यक पोषण तत्व पहुंचाता है। ये नैनो यूरिया फसलों को स्वस्थ बनाता है और फसलों को गिरने से भी बचाता है।

6.नैनो यूरिया के 500 मिली की बोतल में 40,000 पीपीएम नाइट्रोजन होता है। ये पाम्परिक यूरिया की एक बोरी के नाइट्रोजन के पोषक तत्व के बराबर होता है।

कब मिलेगी नैनो यूरिया और कितनी होगी कीमतें : -

1.इफको ने बताया है कि नैनो यूरिया लिक्विड का उत्पादन जून 2021 में ही शुरू हो जायेगा और जल्द ही यह नैनो यूरिया मार्केट में आ जा जायेगा। ऐसा माना जा रहा है कि खरीफ की फसल के दौरान किसानों को अपने आसपास की मार्केट में नैनो यूरिया मिल जायेगी।

2.नैनो यूरिया की प्रति 500 मिली की बोतल या डब्बा की पैकिंग की कीमत 240 रुपये तय की गयी है। वर्तमान समय में एक बोरी यूरिया से दस प्रतिशत सस्ती होगी।

कहां-कहां मिलेगीं : -

नैनो यूरिया फिलहाल इफको के ई-कॉमर्स प्लेटफार्म www.iffcobazar.in पर मिलेगी। मुख्य रूप से सहकारी बिक्री केन्द्रों पर तो निश्चित रूप से मिलेगी। इसके अलावा अन्य व्यापारिक माध्यमों से किसानों तक पहुंचायी जायेगी।

किसानों की आय कितनी बढ़ेगी : -

नैनो यूरिया किसानों के लिए सस्ती तो है ही साथ ही पैदावार भी बढ़ायेगी। इससे कम लागत में अधिक पैदावार होने से किसानों की आमदनी बढ़ेगी। नैनो यूरिया के लिये किये गये परीक्षण से पता चला है कि फसलों की उपज में 8 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी हो सकती है।

किसान के साथ सरकार को भी होगा लाभ : -

पूरे भारत में वर्तमान समय में 350 लाख टन यूरिया का इस्तेमाल होता है। इसमें सरकार को 600 करोड़ रुपये की सब्सिडी देनी पड़ती है। नैनो यूरिया के इस्तेमाल से 50 प्रतिशत तक बचत किये जाने की योजना है। 50 प्रतिशत बचत होने से किसानों को पूरा लाभ मिलेगा।

वहीं बिना सब्सिडी नैनो यूरिया के तैयार होने से सरकार को 600 करोड़ रुपये का लाभ होगा। सरकार को यूरिया आयात करने पर जो भारी-भरकम राशि खर्च करनी होती है, वो भी नहीं करनी होगी। इससे सरकार कृषि क्षेत्र के दूसरे साधनों पर यह राशि खर्च कर पायेगी। जिसका लाभ किसानों को ही मिलेगा।

वर्तमान समय में किसान भाइयों द्वारा प्रति एकड़ 100 किलोग्राम पारम्परिक यूरिया का इस्तेमाल होता है। कृषि वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि यूरिया के कम इस्तेमाल करने के अभियान के तहत नैनो यूरिया की एक बोतल प्रति एकड़ इस्तेमाल करना ही काफी होगा। इससे किसानों को काफी बचत होगी।

राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली (एनएआरएस) के तहत 20 आईसीएआर संस्थानों, कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केन्द्रों में लगातार दो साल तक भिन्न-भिन्न स्थानों और भिन्न-भिन्न फसलों पर किये परीक्षण से सामने आये लाभकारी परिणामों के आधार पर नैनो यूरिया को उर्वरक नियंत्रण आदेश (एफसीओ-1985) में शामिल कर लिया गया है। इसका मतलब हुआ कि सरकार द्वारा नैनो यूरिया को भी प्रमाणित कर दिया गया है। इसके इस्तेमाल में किसान भाइयों को किसी तरह का कोई सन्देह नहीं होना चाहिये।

कैसे किया जायेगा इस्तेमाल: -

नया-नया नैनो यूरिया मार्केट में आने वाला है। इसको लेकर किसान भाइयों में उत्सुकता अवश्य होगी। कुछ किसान भाई तो अपनी खरीफ की फसल में ही इस्तेमाल करने की योजना बना रहे होंगे। लेकिन अधिकांश किसान भाइयों के समक्ष यह सवाल उत्पन्न होगा कि इस नैनो यूरिया का इस्तेमाल किस प्रकार से किया जायेगा। वैसे आम तौर पर 500 मिली लीटर की लिक्विड नैनो यूरिया होने के कारण यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इसका घोल बनाकर खेतों में खड़ी फसल पर छिड़काव किया जायेगा लेकिन इसकी असली विधि इफको द्वारा बतायी जायेगी। इफको ने यह भी स्पष्ट किया है कि जल्द ही देश भर में किसानों को नैनो यूरिया के इस्तेमाल के लिए प्रशिक्षण दिया जायेगा। इसलिये किसान भाइयों को थोड़ा धैर्य रखकर इस प्रशिक्षण अभियान का इंतजार करना होगा और इस प्रशिक्षण के दौरान सिखाई जाने वाली बातों को बहुत ही ध्यान से सीखना होगा। ताकि प्रशिक्षण में मिली बारीक जानकारियों से इस्तेमाल करने पर किसानों को अधिक से अधिक लाभ मिल सकता है।

औषधीय जिमीकंद की खेती कैसे करें

जिमीकंद यानी ओल औषधीय गुणों से भरपूर होता है। इसकी खेती यहां प्राचीन काल से ही होती रही है।अनेक आधुनिक सब्जियों से पूर्व कंद, मूल एवं फलों का विवरण वेद, पुराणों में मिलता है। बिहार राज्य में गृह वाटिका से लेकर व्यवसाहिक स्तर पर इसकी खेती की जाती है। इसे हल्के छायादार बागों में भी सहयोगी फसल के रूप में लगाया जा सकता है। इससे बवासीर, पेचिस, दमा, टच्यूमर, उदर पीड़ा, फेंफड़ों की सूजन, रक्त विकार आदि में उपयोगी बताया जाता है।

जिमीकंद की खेती की संपूर्ण जानकारी : -

किसी भी कंद वाली फसल के लिए उत्तम जल निकासी वाली एवं भुरभुरी मिट्टी अच्छी रहती है। कंद वाली फसलों के लिए खेत की जुताई करने के बाद बार बार पाटा लगाना चाहिए ताकि खेत में ढेल न बनें।

हर जगह होने लगी खेती: -

जिमीकंद की खेती अब बिहार के अलावा समूचे देश में होने लगी है। इसकी फसल करीब 225 दिन में तैयार होती है। इससे 40 से 50 टन कंद प्राप्त होते हैं।

कैसे करें बुवाई: -

जिमीकंद का बीज आलू की तरह कंद को पूरा लगाकर या काटकर लगाया जाता है। इसके लिए 250 से 300 ग्राम का कंद उपयुक्त होता है। कटिंग वाले कंदों में अंकुरण के लिए कलि. का, आंखों का होना आवश्यक है।

बीजोपचार : -

कंदों की बिजाई करने से पूर्व इनका उपचार जरूर करना चाहिए। इसके लिए 5 ग्राम एमीसान एवं तीन ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 0.5 ग्राम को प्रति लीटर पानी में घोलकर कंदों को आधा घण्टे तक दवा वाले पानी में डालकर निकालना चाहिए। इसके अलावा कार्बन्डाजिम एवं बावस्टीन की दो ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोलकर कंदों को उसमें डुबोकर भी उपचार करना चाहिए। दोनों तरह की क्रियाओं में से केवल एक ही तरह की दवाओं का प्रयोग करें।

बीज दर : -

250 ग्राम के कंद को 75 सेंटीमीटर की दूरी पर लगाने से 50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर, 500 ग्राम के कंद लगाने पर 80 क्विंटल ,250 ग्राम का कंद एक मीटर की दूरी पर लगाने से 25 क्विंटल , 500 ग्राम के कंदों को एक मीटर पर लगाने के लिए 50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर बीज की जरूरत होती है।

साथ ही मिट्टी में बरबाद होने वाला यूरिया भूमिगत जल को दूषित करता है। पारम्परिक यूरिया के इन विकारों को दूर करने के लिए नैनो यूरिया की खोज की गयी

कब होती है कंदों की बुवाई : -

जिमीकंद की बिजाई अप्रैल से जून तक की जाती है। समतल खेत में बुवाई के लिए सड़ी गोबर की खाद डालने के अलावा एनपीके का उपयोग मिट्टी जांच के आधार पर करें। जुते खेत में 70 से 90 सेंटीमीटर दूरी पर कुदाल से गड्ढा खोदकर 20 से 30 सेमी गहरी नाली खोदकर उनमें कंदों को रोप देते हैं। नाली में कंदों को ढक दिया जाता है। बुवाई के समय इस बात का ध्यान रखें कि कंद का कलिका वाला हिस्सा ऊपर की तरफ रहे।

कितनी डालें खाद : -

कंद की अच्छी उपज के लिए सडी गोबर की खाद 15 क्विंटल एवं नत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाश 80,60, 80 किलोग्राम के अनुपात में प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें। फास्फोरस की पूरी मात्रा जमीन में मिला दें। बाकी तत्वों को कंदों पर मिट्टी चढ़ाते समय 60 से 80 दिन की फसल होने पर जमीन में डालें। शूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रयोग भी जोत में मिलाकर करने से उत्पादन बढ़ता है। कंदों के अच्छे अंकुरण के लिए धान के पुआल आदि से कंदों को ढक देना चाहिए। इससे जमीन में नमी बनी रहती है और गर्मी का प्रभाव भी नव अंकुर पर नहीं पड़ता। इस प्रक्रिया को अपनाने से खरपतवार भी नहीं उगते।

सिंचाई : -

कंदों को बरसात से पहले हल्की दो सिंचाई आवश्यक होती हैं। निराई एक माह बार और दो से तीन माह बाद करनी होती है।

चन्दन की खेती : लाखों कमाएं

चन्दन की खेती : -

चन्दन है इस देश की माटी, तपो भूमि हर ग्राम है. ये गीत लोगों के जेहन में जब भी आता है तो चन्दन की भी हमें याद दिलाता है. चन्दन को हिन्दू धर्म में तो बहुत ही ऊँचा स्थान प्राप्त है. भारत में शायद ही कोई ऐसा घर होगा जहाँ किसी न किसी रूप में चन्दन मौजूद न हो. चन्दन को माथे पर लगाया जाता है, मंदिर में भगवान जी को लगाया जाता है तथा इसकी लकड़ी को अंतिम संस्कार में भी प्रयोग में लाया जाता है.जो की हिन्दू धर्म में इसकी महत्ता को दर्शाता है. इसके अलावा इसका प्रयोग औषधीय रूप में भी किया जाता है, चहरे की सुंदरता बढ़ने के लिए या त्वचा में निखार लेन के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है. इसका प्रयोग इत्र बनाने में भी किया जाता है, सबसे खास बात ये है की इसका प्रयोग जन्म से मृत्यु तक किसी न किसी रूप में होता है.

चन्दन की खेती: चन्दन की खेती करने को अभी तक कोई खास योजना नहीं आई या कह सकते हैं की किसी किसान या सरकार ने अपनी इच्छा शक्ति नहीं दिखाई. इससे ये हुआ की किसी ने भी आगे बढ़कर किसी भी औषधीय पौधे की खेती नहीं की.

चन्दन की लकडी की बाजार में मांग : -

चन्दन की लकड़ी की मांग और उपलब्धता में बहुत अंतर है यही कारण है की इसकी लकड़ी 8000 से 12000 प्रति किलो के हिसाब से जाती है. इसकी मांग भारत ही नहीं पूरे विश्व में इसकी मांग होती है. चन्दन जितना महँगा है उतना ही इसमें अपराध भी पनपा है. बीरप्पन को 90 के दशक में चन्दन और हाथी दांत ने अपराध की दुनियां में मशहूर कर दिया था.

अकेले हिन्दुस्थान में ही चन्दन की खपत सप्लाई से ज्यादा है. इसमें समझने वाली बात है की भारत में ही इतनी मांग और उत्पादन है या विश्व के दूसरे देशों में भी तो चन्दन होता होगा न ? फिर भारत के चन्दन की ही इतनी मांग क्यों है? विश्व में भारत के चन्दन का सर्वोच्च स्थान है. इस लिए भारतीय चन्दन की मांग सबसे ज्यादा है.

चन्दन की प्रजातियां: : -

चन्दन की 16 प्रजातियां पाई जाती है. जिनमे सेंटलम एल्बम प्रजातियाँ सबसे सुगन्धित तथा औषधीय गुणों से भरपूर है द्य इसके अलवा सफेद चन्दन, सेंडल, अबेयाद, श्रीखंड, सुखद संडालो प्रजाति की चन्दन भी पाया जाता है. चन्दन के हरे पेड़ में खुशबू नहीं होती है इसकी सुखी लकड़ी में ही खुशबू होती है. इसका प्रयोग खिलोने, घर के फर्नीचर बनाने में भी किया जाता है. इसका पेड़ सामान्यतः 10 से 12 साल में पूरा पेड़ बन जाता है. इस पेड़ की ऊँचाई 18 से लेकर 20 मीटर तक होती है। यह परोपजीवी पेड़, सैंटेलेसी कुल का सैंटेलम ऐल्बम लिन्न **(Santalum album linn.)** है। वृक्ष की आयुवृद्धि के साथ ही साथ उसके तनों और जड़ों की लकड़ी में सौगंधिक तेल का अंश भी बढ़ने लगता है। इसकी पूर्ण परिपक्वता में 8 से लेकर 12वर्ष तक का समय लगता है। इसके लिये ढालवाँ जमीन, जल सोखनेवाली उपजाऊ चिकनई मिट्टी तथा 500 से लेकर 625 मिमी. तक वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है।

गुण और प्रयोग : -

श्वेत चंदन कडवा, शीतल, रुक्ष, दाहशामक, पिपासाहर, ग्राही, हृदय संरक्षक, विषघ्न, वर्ण्य, कण्डूघ्न, वृष्य, आहादकारक, रक्तप्रसादक, मूत्रल, दुर्गधहर एवं अंग. मर्द-शामक है।

इसका उपयोग ज्वर, रक्तपित्त विकार, तृषा, दाह, वमन, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, रक्तमेह, श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर, उष्णवात (सोजाक), रक्तातिसार तथा अनेक चर्मरोगों में किया जाता है।

1.पित्तज्वर, तीव्रज्वर एवं जीर्णज्वर में चंदन के प्रयोग से दहा एवं तृषा की शांती होती है तथा स्वेद उत्पन्न होकर ज्वर भी कम होता है। ज्वर के कारण हृदय पर जो विषैला परिणाम होता है वह भी इसके देने से नहीं होता है।
2.नारियल के जल में चंदन घिसकर १ तो० की मात्रा में पिलाने से प्यास कम होती है।
3.चंदन को चावल की धोवन में घिस कर मिश्री एवं मधु मिलाकर पिलाने से रक्तातिसार, दाह, तृष्णा एवं प्रमेह आदि में लाभ होता है। इसी प्रकार मूत्रदाह, मूत्राघात, रक्तमेह एवं सोजाक में चंदन को चावल की धोवन में घिस कर मिश्री मिलाकर पिलाते हैं।
4.आंवले के रस के साथ चंदन देने से वमन बंद होता है।
5.दुर्गध युक्त श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर एवं प्रमेह आदि में चंदन का काथ उपयोगी है।

चन्दन की खेती के लिए मिट्टी : -

सामान्यतः चन्दन का पेड़ किसी भी तरह की उपजाऊ जमीन में उगाया जा सकता है लेकिन इसको जैसा हमने ऊपर बताया है न ज्यादा गर्मी और न ही ज्यादा ठण्ड बर्दाश्त होती है. जैसे इसको राजस्थान के रेतीले और गर्म स्थान पर नहीं उगाया जा सकता ऐसे ही इसे पहाड़ के बर्फीले इलाके में भी नहीं उगाया जा सकता है. इसके लिए ज्यादा पानी वाली मिट्टी भी मुफीद नहीं है इसको शुष्क और सामान्य मौसम और मिट्टी वाले क्षेत्र में उगाया जा सकता है.

पेड़ लगाने का तरीका: -

चन्दन के पेड़ लगाने का तरीका किसान के ऊपर निर्भर करता है वो उसे खेत की मेड पर भी लगा सकता है और पूरे खेत में भी लगा सकता है. चन्दन का पेड़ अर्धपरजीवी पेड़ है अर्थात ये आधा भोजन खुद तैयार करता है तथा आधा दूसरे पौधे से लेता है तो इसके साथ किसी दूसरे पौधे को भी लगाया जाता है

नहीं तो चन्दन का पौधा सुख जायेगा. आप सहायक पौधे के रूप में नीम, मीठा नीम , सहजन , या किसी अन्य पौधे को भी लगा सकते है. बशर्ते वो भी पौधा बारहमासी होना चाहिए. पौधे से पौधे की दूरी 10 से 15 फुट की दूरी होनी चाहिए.

चन्दन की लकडी की बाजार में मांग : -

चंदन की खेती के लिए बीज तथा पौधे दोनों खरीदे जा सकते हैं। इसके लिए केंद्र सरकार की लकड़ी विज्ञान तथा तकनीक (Institute of wood science & technology) संस्थान बैंगलोर में है। यहां से आप चंदन की पौध प्राप्त कर सकते हैं।

पता इस प्रकार है : -

Tree improvement and genetics division

Institute of wood science and technology

o.p. Malleshwaram Bangalore – 506003 (India)

E-mail – tip_iwst@icfre.org

tel no. – 00 91-80 – 22-190155

fax number – 0091-80-23340529

चन्दन के पौधे के रोग: -

सैंडल स्पाइक (दकसमे चपाम) नामक रहस्यपूर्ण और संक्रामक वानस्पतिक रोग इस वृक्ष का शत्रु है। इससे संक्रमित होने पर पत्तियाँ ऐंठकर छोटी हो जाती हैं और वृक्ष विकृत हो जाता है। इस रोग की रोकथाम के सभी प्रयत्न विफल हुए हैं।

चन्दन को लेकर भ्रांतियां: -

चन्दन को लेकर लोगों में बहुत भ्रांतियां हैं जैसे " चन्दन विष ब्यापत नहीं लिपटे रहत भुजंग" इससे तात्पर्य यह है की चन्दन के पेड़ से यदि विषधर भी लिपटे रहें तो भी वो अपने गुण नहीं छोड़ता और चन्दन की खेती के लिए सरकार से कोई अनुमति लेने की भी जरूरत नहीं होती. हाँ जब आपको पेड़ कटाने हों तो तभी आपको सरकार से अनुमति की जरूरत होती है जो और भी तरह के पौधों के लिए लेनी होती है और ये आसानी से मिल भी जाती है.

रायपुर:मजदूर से मालिक बना रामनाथ: प्रतिदिन 45 लीटर दूध विक्रय से हो रही अच्छी आमदनी

गुण और प्रयोग : -

दूसरे के घरों में रोजीदृमजदूरी कर जीवनदृयापन करने वाला कांकेर जिले के चारामा विकासखण्ड के ग्राम आंवरी निवासी रामनाथ यादव अब आत्मनिर्भर बन चुका है, वह प्रतिदिन 45 लीटर दूध बेचकर अच्छी आमदनी प्राप्त कर रहा है। दूसरे के घरों में नौकर लगकर गायदृबैल चराने वाला रामनाथ आज स्वावलंबी बन चुका है। दो देसी गाय से गौदृपालन का कार्य शुरू करने वाला रामनाथ यादव आज 22 पशुधन का मालिक बन गया है, उनकी यह सफलता मंत्रमुग्ध करने वाला है और लोगों के लिए प्रेरणादायी भी है। रामनाथ ने बताया कि उनकी सफलता के पीछे शासन द्वारा संचालित योजना का बहुत बड़ा योगदान है। कांकेर जिले के प्रभारी सचिव धनंजय देवांगन और कलेक्टर के.एल. चौहान ने उन्हें उनकी सफलता के लिए बधाई देते हुए उसके पुत्र साजन कुमार को 22 गायों से बढ़ाकर 100 गायों का डेयरी बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। रामनाथ यादव ने बताया कि वह कक्षा दूसरी में पढ़ रहा था, तभी पिता जी ने गरीबी के कारण पेट पालने के लिए दूसरे के घर में गाय चराने हेतु नौकर लगा दिया, उसके बाद वह अन्य घर में कम मजदूरी में गाय चराने लगा तथा लगभग 15 वर्ष चरवाहा का काम करने के बाद दूसरे के द्वारा दिये गये दो देशी गाय से गौदृपालन प्रारंभ किया। देशी गाय में कृत्रिम गर्भाधान से उन्नत नस्ल के मादा वत्स पैदा हुई, बड़ी होने के बाद उन्हें भी कृत्रिम गर्भाधान कराया गया, धीरेदृधीरे उन्नत नस्ल के बछियादृबछड़ों की संख्या बढ़ती गई, जो बड़े होकर गाय एवं बैल बने। बैल को विक्रय किया गया तथा गाय के 2 लीटर दूध को बेचने के साथ ही दुग्ध व्यवसाय का कार्य प्रारंभ किया गया। वर्तमान में उनके द्वारा 45 लीटर दूध का विक्रय किया जा रहा है। रामनाथ यादव ने कहा कि आज मेरे पास लगभग 5 लाख रूपये की 22 पशुधन हैं, जिसमें 2 गाय एच.एफ. नस्ल, 2 गाय गिर नस्ल, 4 गाय शाहीवाल नस्ल और 4 गाय जर्सी नस्ल के हैं, इसके अलावा 6 उन्नत नस्ल के बछिया और 4 बछड़ा हैं, जिसे जोड़ी बनाकर बेचने से अतिरिक्त आमदनी होगी। उन्होंने कहा कि गौपालन के कार्य में पशुधन विकास विभाग द्वारा समयदृसमय मार्गदर्शन एवं सहयोग दिया जाता है।

रामनाथ यादव ने बताया कि वह कक्षा दूसरी में पढ़ रहा था, तभी पिता जी ने गरीबी के कारण पेट पालने के लिए दूसरे के घर में गाय चराने हेतु नौकर लगा दिया, उसके बाद वह अन्य घर में कम मजदूरी में गाय चराने लगा तथा लगभग 15 वर्ष चरवाहा का काम करने के बाद दूसरे के द्वारा दिये गये दो देशी गाय से गौवृपालन प्रारंभ किया। देशी गाय में कृत्रिम गर्भाधान से उन्नत नस्ल के मादा वत्स पैदा हुई, बड़ी होने के बाद उन्हें भी कृत्रिम गर्भाधान कराया गया, धीरेधीरे उन्नत नस्ल के बछियावृबछड़ों की संख्या बढ़ती गई, जो बड़े होकर गाय एवं बैल बने। बैल को विक्रय किया गया तथा गाय के 2 लीटर दूध को बेचने के साथ ही दुग्ध व्यवसाय का कार्य प्रारंभ किया गया। वर्तमान में उनके द्वारा 45 लीटर दूध का विक्रय किया जा रहा है। रामनाथ यादव ने कहा कि आज मेरे पास लगभग 5 लाख रूपये की 22 पशुधन हैं, जिसमें 2 गाय एच.एफ. नस्ल, 2 गाय गिर नस्ल, 4 गाय शाहीवाल नस्ल और 4 गाय जर्सी नस्ल के हैं, इसके अलावा 6 उन्नत नस्ल के बछिया और 4 बछड़ा हैं, जिसे जोड़ी बनाकर बेचने से अतिरिक्त आमदनी होगी। उन्होंने कहा कि गौपालन के कार्य में पशुधन विकास विभाग द्वारा समयवृसमय मार्गदर्शन एवं सहयोग दिया जाता है।

जानिए प्रगतिशील किसान श्री नवीन यादव जी से कैसे बिना रासायनिक खाद के अच्छा उत्पादन ले सकते हैं.

आज हमने बनारस जिले के हथियार खुर्द गांव के प्रगतिशील किसान श्री नवीन जी से बात की, हमने उनसे जाना कैसे वो बिना रासायनिक खाद के भी अच्छा उत्पादन ले सकते हैं. आइये बताते है उनसे merikheti.com की टीम की क्या बात हुई.

मेरीखेती.कॉम टीम:- नमस्कार नवीन जी, मेरीखेती.कॉम टीम आपका स्वागत करती है. आप हमारे किसान भाइयों को कुछ अपने बारे में बताइये.

नवीन जी :- मेरा सभी किसान भाइयों को नमस्कार. में मेरीखेती.कॉम की टीम का भी आभार व्यक्त करता हूँ की जो काम आप लोग कर रहे हैं उससे किसानों को ज्यादा से ज्यादा फायदा होगा और कम लागत में अधिक उपज मिलेगी. जैसे की सभी किसान भाई जानते हैं मेरीखेती.कॉम किसानों के द्वारा ही चलाया जाने वाली वेबसाइट है.

में आपको बताना चाहूंगा की में अपने चाचा जी श्री सतीश यादव (फौजी) से ही खेती के बारे में ज्यादा जाना हूँ, वही हमें खेती की नई-नई तकनीकी को प्रयोग में लेने के लिए उत्साहित करते हैं. उन्होंने ही हमें जैविक खेती करने को हमें प्रोत्साहित किया.

मेरीखेती.कॉम :- आपने इसकी शुरुआत कैसे की ?

नवीन जी :- मेने इसको शुरू करने में बस 500 रुपये खर्च किये थे यानि में 500 रुपये के बीज खरीद के लाया था लौकी और काशीफल के उनको मेने गाय के मूत्र में ४-५ घंटे के लिए भिगो दिया और उसके बाद पंखें की हवा में २-३ घंटे के लिए सूखा दिया. उसके बात मेने इसे १ बिस्सा खेत में लगा दिया और २ बिस्सा खेत में लौकी को लगा दिया.

मेरीखेती.कॉम :- आपने खेत की तयारी कैसे की?

नवीन जी :- मेने घर पर ही जीवामृत बनाया किशन चन्द्रा जी से में बहुत प्रभावित हूँ. मेने उनसे ही प्रभावित होकर देसी कीटनाशक बनाया था. खेत में पानी के साथ देकंपोजर को मेने खेत में पानी के साथ डाला जिसमे गोमूत्र, गुड़ और बहुत सारे पेड़ों की पत्तियां मिला के मेने बनाया था. मेने कीटनाशक भी देसी गाय की छाछ से मेने कीटनाशक बनाया है जिसको में खेत में कड़ी फसल में प्रयोग करते हैं.

मेरीखेती.कॉम :- आपकी फसल और रासायनिक फसल में क्या फर्क है?

नवीन जी :- में अभी अपनी फसल को पूरा समय दे रहा हूँ और अपनी और रासायनिक फसल में जो फर्क है वो आप उसको टेस्ट के बाद ही पता चलेगा लेकिन हाँ आप उसके रंग और प्राकृतिक रूप से भी महसूस कर सकते हैं. घर में जो महिलाएं खाना बनती है वो समझ सकती है की जैविक सब्जी को पकने में समय नहीं लगता है और उसका स्वाद अलग ही होता है. आज में जब अपनी सब्जी को आढ़त पर ले जाता हूँ तो सबसे पहले मेरी फसल बिकती है. लोग इन्तजार करते हैं मेरी फसल का. पहले मुझे विश्वास ही नहीं होता था की जैविक फसल की इतनी मांग है.

मेरीखेती.कॉम :- आप मेरीखेती.कॉम के किसानों के लिए आप क्या कहना चाहेंगें ?

नवीन जी :- में सबसे पहले तो मे. रीखेती.कॉम की टीम को धन्यवाद देना चाहूंगा जिन्होंने किसानो को एक ऐसी जगह दी हैं जहाँ सभी किसान एक दूसरे के सहयोग से समस्याओं का समाधान पा जाते हैं. दूसरा में किसानों को कहना चाहूंगा की अपनी आप को और अपनी आने वाली पीढ़ी को बचाने के लिए हमें जैविक खेती को अपनाना चाहिए जिससे हम भयानक से भयानक बिमारियों से बच सकें जैसे कैंसर, शुगर, जोड़ों के दर्द, हाई ठच आदि से बच सकें और अपने बच्चों को एक आदर्श जीवन दे सकें.

मेरीखेती.कॉम :- धन्यवाद नवीन जी आपने हमें समय दिया और हमारे किसानों के लिए आपने अपने बिचार साझा किये.

नवीन जी :- धन्यवाद सर मेरी आपकी टीम और मेरीखेती को बहुत बहुत धन्यवाद आप ऐसे ही किसानों को जागरूक करते रहें और उन्हें आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करते रहें.

मछलियों के रोग तथा उनके उपचार

मछलियां भी अन्य प्राणियों के समान प्रतिकूल वातावरण में रोग ग्रस्त हो जाती हैं रोग फैलते ही संचित मछलियों के स्वभाव में प्रत्यक्ष अंतर आ जाता है.

रोग ग्रस्त मछलियों में निम्नलि. खित लक्षण पाए जाते हैं: -

1.बीमार मछलियां समूह में ना रहकर किनारे पर अलग अलग दिखाई देती है
2.बेचैनी अनियंत्रित रहती है
3.अपने शरीर को पानी में गड़े फूट में रग. ड़ना
4.पानी में बार-बार कूदना
5.पानी में बार-बार गोल गोल घूमना पानी में बार-बार गोल गोल घूमना
6.भोजन न करना
7.पानी में कभी कभी सीधा टंगे रहना व कभी कभी उल्टा हो जाना
8.मछली के शरीर का रंग फीका पड़ जाता है शरीर का चिपचिपा होना
9.आँख, शरीर व गलफड़ों का फूलना शरीर की त्वचा का फटना
10.शरीर में परजीवी का वास हो जाना

रोग के कारण : -

मछली में रोग होने के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं:
1- पानी की गुणवत्ता तापमान पीएच ऑक्सीजन कार्बन डाइऑक्साइड आदि की असंतुलित मात्रा.
2- मछली के वर्जय यानी ना खाने वाले पदार्थ (मछली का मल आदि) जल में एकत्रित हो जाते हैं और मछली के अंगों जैसे गलफड़े, चर्म, मुख गुहा आदि के संपर्क में आकर उन्हें नुकसान पहुंचाते हैं
3- बहुत से रोग जनित जीवाणु व विषाणु जल में होते हैं जब मछली कमजोर हो जाती हैं तब वो मछली पर आक्रमण करके मछली को रोग ग्रसित कर देते हैं.

मुख्यत: रोगों को चार भागों में बांटा जा सकता है : -

1- परजीवी जनित रोग
2- जीवाणु जनित रोग
3- विषाणु जनित रोग
4- कवक फंगस जनित रोग

1.परजीवी जनित रोग : -

आंतरिक परजीवी मछली के आंतरिक अंगों जैसे शरीर गुहा रक्त नलिका आदि को संक्रमित करते हैं जबकि बाहरी परजीवी मछली के गलफड़ों, पंखों चर्म आदि को संक्रमित करते हैं

1.ट्राइकोडिनोसिस : -

लक्षण: यह बीमारी ट्राइकोडीना नामक प्रोटोजोआ परजीवी से होती है जो मछली के गलफड़ों व शरीर के सतह पर रहता है इस रोग से संक्रमित मछली शिथिल व भार में कमी आ जाती है. गलफड़ों से अधिक श्लेष्म प्रभावित होने से स्वसन में कठिनाई होती है.
उपचार: निम्न रसायनों में संक्रमित मछली को 1 से 2 मिनट डुबो के रखने से रोग को ठीक किया जा सकता है 1.5: सामान्य नमक घोल कर 25
पीपीएम फर्मोलिन, 10 पी पी एम कॉपर सल्फेट.

2- माइक्रो एवं मिक्सो स्पोरिडिसिसें : -

लक्षण: यह रोग अंगुलिका अवस्था में ज्यादा होता है. यह कोशिकाओं में तंतुमय कृमिकोष बनाके रहते हैं तथा ऊतकों को भारी क्षति पहुंचाते हैं.

उपचार: इसकी रोकथाम के लिए कोई ओषधि नहीं है. इसके उपचार के लिए या तो रोगग्रस्त मछली को बाहर निकल देते हैं. या मतस्य बीज संचयन के पूर्व चूना ब्लीचिंग पाउ. डर से पानी को रोग मुक्त करते हैं.

3- सफेद धब्बेदार रोग: -

लक्षण : यह रोग इन्कयियोथीसिस प्रोटोजोआ द्वारा होता है. इसमें मछली की त्वचा, गलफड़ों एवं पंख पर सफेद छोटे छोटे धब्बे हो जाते हैं.
उपचार: मैला काइट ग्रीन ०.1 पी पी एम , 50 पी पी एम फर्मोलिन में 1-2 मिनट तक मछली को डुबोते हैं.

2.जीवाणु जनित रोग : -

1.कालमानेरिस रोग: -

लक्षण: यह फ्लेक्सीबेक्टर कालमानेरिस नामक जीवाणु के संकमण से होता है, पहले शरीर के बाहरी सतह पर फिर गलफड़ों में घाव होने शुरू हो जाते हैं. फिर जीवाणु त्वचीय ऊतक में पहुंच कर घाव कर देते हैं.

उपचार: संक्रमित भाग में पोटेशियम परमेग. नेट का लेप लगाया जाता है. 1 से 2 पी पी एम का कॉपर सल्फेट का खोल पोखरों में डालें.

2.ड्रॉप्सी: -

लक्षण: मछली जब हाइड्रोफिला जीवाणु के संपर्क में आती है तब यह रोग होता है. यह उन पोखरों में होता है जहाँ पर्याप्त मात्रा में भोजन उपलब्ध नहीं होता है. इससे मछली का धड़ उसके सिर के अनुपात में काफी छोटा हो जाता है. शल्क बहुत अधिक मात्रा में गिर जाते हैं व पेट में पानी भर जाता है.

उपचार: मछलियों को पर्याप्त भोजन देना पानी की गुणवत्ता बनाये रखना
१०० किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से पानी में 15 दिन में चूना डालते रहना चाहिए.

3- बाइब्रियोसिस रोग: -

लक्षणः यह रोग बिब्रिया प्रजाति के जीवाणुओं से होता है.

इसमें मछलियों को भोजन के प्रति अरुचि के साथ साथ रंग काला पड़ जाता है. मछली अचानक मरने भी लगती हैं. यह मछली की आंखों को अधिक प्रभावित करता है सूजन के कारण आंखें बाहर आ जाती हैं.

उपचारः ऑक्सीटेटरासाइक्लिन तथा सल्फोनामाइन को 8 से 12 ग्राम प्रति किलोग्राम भोजन के साथ मिला कर देना चाहिए.

3.कवक एवं फफूंद जनित रोग : -

लक्षणः सेप्रोलिग्नियोसिसः यह रोग सेप्रोलिग्नियोसिस पैरालिसिका नामक फफूंद से होता है. जाल द्वारा मछली पकड़ने व परिवहन के दौरान मत्स्य बीज के घायल हो जाने से फफूंद घायल शरीर पर चिपक कर फैलने लगती है. त्वचा पर सफेद जालीदार सतह बनाता है. जबड़े फूल जाते हैं पेक्टरल वाका डॉल्फिन पेक्टोरल व काडल फिन के पास रक्त जमा हो जाता है. रोग ग्रस्त भाग पर रुई के समान गुच्छे उभर आते हैं.

उपचारः 3ः नमक का घोल या 1 :1000 पोटाश का घोल पोटाश का घोल या 1 अनुपात 2 हजार कैलशियम सल्फेट का घोल में 5 मिनट तक डुबोने से विषाणु रोग समाप्त किया जा सकता है.ा खोल पोखरों में डालें.

1.स्पिजुस्टिक अल्सरेटिव सिंड्रोम: -

गत 22 वर्षो से यह रोग भारत में महामारी के रूप में फैल रहा है. सर्वप्रथम यह रोग त्रिपुरा राज्य में 1983 में प्रविष्ट हुआ तथा वहां से संपूर्ण भारत में फैल गया यह रोग तल में रहने वाली सम्बल, सिंधी, बाम, सिंघाड़ कटरंग तथा स्थानीय छोटी मछलियों को प्रभावित करता है. कुछ ही समय में पालने वाली मछलियां कार्प, रोहू ,कतला, मिरगला मछलियां भी इस रोग की चपेट में आ जाती हैं.

लक्षणः इस महामारी में प्रारंभ में मछली की त्वचा पर जगह-जगह खून के धब्बे उतरते हैं बाद में चोट के गहरे घाव में तब्दील हो जाते हैं. चरम अवस्था में हरे लाल धब्बे बढ़ते हुए पूरे शरीर पर यहां वहां गहरे अल्सर में परणित हो जाते हैं. पंख व पूंछ गल जाती हैं. अतः शीघ्र व्यापक पैमाने पर मछलियां मर कर किनारे पर दिखाई देती है.

बचाव के उपायः वर्षा के बाद जल का पीएच देखकर या कम से कम 200 किलो चूने का उपयोग करना चाहिए. तालाब के किनारे यदि कृषि भूमि है तो तालाब की चारों ओर से बांध देना चाहिए ताकि कृषि भूमि का जल सीधे तलाब में प्रवेश न करें. शीत ऋतु के प्रारंभिक काल में ऑक्सीजन कम होने पर पंप ब्लोवर से पानी में ऑक्सीजन प्रवाहित करना चाहिए.

उपचारः अधिक रोग ग्रस्त मछली को तालाब से अलग कर देना चाहिए. चूने के उपयोग के साथ-साथ ब्लीचिंग पाउडर 1 पीपीएम अर्थात 10 किलो प्रति हेक्टेयर मीटर की दर से तालाब में डालना चाहिए.

दिसम्बर माह के कृषि संबंधी आवश्यक कार्य

गेहूं की देखभाल: -

समय पर बोए गेहूं में अब पहली सिंचाई का उपयुक्त समय आ चुका है। गेहूं फसल में पहली क्रांतिक अवस्था बुवाई के 21-23 दिन बाद आ जाती है. इस अवस्था पर पौधों से जमीन की सतह के पास क्राउन जड़ें निकलती हैं जिनके विकास के लिए मृदा में पर्याप्त नमी का होना आवश्यक होता है। यदि इस अवस्था पर सिंचाई की जाती है तो पौधों से अधिक संख्या में जड़ों एवं कल्लों का विकास होता है। सीमित सिंचाई साधन की दशा में यदि तीन सिंचाइयों की सुविधा ही उपलब्ध हो तो ताजमूल (क्राउन रूट) अवस्था, बाली निकलने के पूर्व तथा दुग्धावस्था पर करें। यदि दो सिचाइयां उपलब्ध हों तो क्राउन रूट एवं पुष्पावस्था पर करें। यदि एक सिचाई उपलब्ध हो तो क्राउन रूट अवस्था पर करें। सिंचाई के 3-4 दिन बाद नाइट्रोजन की आवश्यक मात्रा का बुरकाव भी करें। गेहूं की फसल में खरपतवारों का नियंत्रण निकाई के अतिरिक्त सल्फोसल्फ्यूरॉन अथवा सल्फोसल्फ्यूरॉन मैटसल्फ्यूरॉन का प्रयोग पहली सिंचाई के पूर्व करें। जहां भी क्लोडिनाफोप व सल्फोसल्फ्यूरॉन से खरपतवारों में प्रतिरोधिता आ गई है वहाँ पेंडिमेथालिन और पिनोक्साडेन का प्रयोग करें । क्लोडिनोफोप, फिनोक्साप्रोप-इथाईल अथवा पिनोक्साडेन को 2.4-डी के साथ न मिलाएं।

उत्तरी भारत में गेहूं की बुवाई यदि 25 नवम्बर के बाद की जाती है तो उसे सामान्यतः पछेती बुवाई माना जाता है। गेहूं की बुवाई दिसम्बर के दूसरे पखवाड़े में अवश्य समाप्त कर लेनी चाहिए। इसके उपरांत यदि बुवाई की जाती है तो इसकी पैदावार में भारी कमी आ जाती है। सिंचित परिस्थितियों में पछेती बुवाई के लिए गेहूं की उपयुक्त प्रजातियाँ इस प्रकार हैं: उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र - एचडी 3059, पीबीडब्ल्यू 590, डब्ल्यूएच 1021, डीबीडब्ल्यू 16, यूपी 2425 उत्तरपूर्वी मैदानी क्षेत्र- डीबीडब्ल्यू 14, एनडब्ल्यू 2036, एचपी 1744 (राजेश्वरी), एचडी 2643 (गंगा) मध्य क्षेत्र- राज 4238, एमपी 3336, एमपी 1203, एचडी 2864 (ऊर्जा) उत्तरी पर्वतीय क्षेत्र- वीएल 892, एचएस 490,एचएस 420, और प्रायद्वीपीय क्षेत्र- एचडी 2932, राज 4083, पीबीडब्ल्यू 533, एचडी 2987 । बुवाई के लिए बीज साफ, स्वस्थ एवं खरपतवारों के बीजों से रहित होना चाहिए। बीज में सरोग ग्रस्त या टूटे हुए दाने न हों। अनुमोदित प्रजाति के प्रमाणित बीज का प्रयोग सदैव लाभप्रद रहता है। एक हैक्टेयर के लिए 125 कि.ग्रा. बीज पर्याप्त रहता है । खेतों में यदि दीमक का प्रकोप हो तो क्लोरपाईरिफास (20 ईसी) ६ 5 लीटर प्रति हैक्टर की दर से पलेवा के साथ दें।

पाले से फसलों का बचाव : -

इस माह वातावरण का तापमान काफी कम हो जाता है। अंतः सभी प्रकार की फसलों को पाले के कुप्रभावों से बचाना चाहिए। आलू, सरसों, मटर, चना और मसूर आदि फसलों पर पाले का कुप्रभाव अधिक होता है। पाले से बचाव के बारे में जनवरी माह के कार्यों में भी विस्तार से बताया गया है।

तिलहनी फसलें : -

तोरिया की फसल इस माह के अंत तक प्रायः पक जाती है। अतः इस फसल की कटाई कर लेनी चाहिए जिससे रबी की अन्य फसल अथवा पछेती गेहूं की शीघ्र बुवाई की जा सके समय से बोई गई सरसों एवं राया (लहटा) में इस माह के अंत तक एक हल्की सिंचाई अवश्य लगा दें इन फसलों में इस समय पर चेपा (माहू) कीट के आने की संभावना रहती है। बादल घिरे रहने की दशा में इस कीट का प्रकोप बहुत तीव्रता से बढ़ता है। इसके रासायनिक नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड (17.8: एस एल) ६ 25 मि.ली. अथवा थियामेथोक्साम (25 डब्ल्यू जी) ६0.2 ग्राम अरथवा डाइमेथोएट (30 ई सी)६1.0 मि.ली. प्रति लीटर पानी का आवश्यक घोल बनाकर छिदकाव करें।

दलहनी फसलें : -

समय से बोई गई चना, मटर और मसूर की फसलों से आवश्यकतानुसार खरपतवारों का उन्मूलन करें। साथ ही यदि वर्षा न हो और मृदा में नमी की कमी हो तो एक हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए।

सब्जियाँ : -

1. तापमान में कमी को देखते हुए सब्जियों में सिंचाई शाम के समय करें यह फसलों को संभावित पाले व शीत लहर बचाने में सहायक होती है।
2. इस मौसम में किसान भाई सब्जियों की निराई-गुड़ाई करके खरपतवारों को नष्ट करें,सब्जियों की फसल में सिंचाई करें तथाउसके बाद संस्तुत उर्वरकों का प्रयोग करें।
3. खेत में तैयार मूली, गाजर और शलजम को उखाड़कर बिक्री हेतु बाजार भेजें।
4. लहसुन में पहले हल्की सिंचाई और फिर ओट आने पर गुडाई करें।
5. मिर्च और बैंगन की तैयार फसल से हरी मिर्चियों को तोड़कर बिक्री हेतु बाजार भेजें।
6. अक्तूबर में बोई गई पालक की फसल कटाई हेतु तैयार हो गई होगी इसको काटकर बिक्री हेतु बाजार भेजें।
7. मटर की फसल पर 2: यूरिया के घोल का छिड़काव करें। इससे मटर की फलियों की संख्या में वृद्धि होती है।
8. कद्दूवर्गीय सब्जियों के अगेती फसल के पौध तैयार करने के लिए बीजों को छोटी पालीथीन के थैलों में भर कर पाली घरों में रखें।
9. राजमा, सेम, टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च, गेदे, मटर व रबी फसलों में शाम के समय आवश्यकतानुसार एक हल्की सिंचाई करें ।

10.इस मौसम में तैयार खेतों में प्याज की रोपाई करें तथा छेदक कीटों की सख्या अधिक पाये जाने पर इनका नियंत्रण फोलिडाल पाउडर (/.25 कि. ग्रा. ६ हैक्टेयर का प्रयोग आसमान साफ होने पर करें।
11.यदि टमाटर, फूलगोभी, बन्दगोभी और ब्रोकली की पौधशाला तैयार है तो मौसस को ध्यान में रखते हुए इस माह भी इनकी रोपाई कर सकते हैं।
12.गोभीवर्गीय सब्जियों में पत्ती खाने वाले कीटों की निरंतर निगरानी करते रहें, यदि इनकी संख्या अधिक हो तो बी. टी./ 1.0 ग्राम ६ लीटर पानी या स्पेनोसेड दवा/1 एम. एल. ६ 3 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव आसमान साफ होने पर करें।.
13.मटर में फली छेदक तथा टमाटर में फल छेदक की निगरानी हेतु फीरोमोन प्रपंच(/8-10 प्रपंचध्हैक्टेयर खेतों में लगाएं।
14. प्याज की समय से बोई गई फसल में थ्रिप्स के आक्रमण की निरंतर निगरानी करते रहें। कीट के पाये जाने पर कार्बारिल (/ 2 ग्रा.६ लीटर पानी किसी चिपकने वाले पदार्थ जैसे टीपोल आदि (1.0 ग्रा. प्रति एक लीटर घोल) में मिलाकर छिड़क दें।
15.प्याज में परपल ब्लोस रोग की निगरानी करते रहें। रोग के लक्षण पाये जाने पर डाएथेन एम 45 / 3 ग्रा. ६ लीटर पानी किसी चिपकने वाले पदार्थ जैसे टीपोल आदि (1 ग्रा. प्रति एक लीटर घोल) में मिलाकर छिड़काव करें।
16.पालक, धनिया, मेथी की बुवाई कर सकते हैं। पत्तों की अच्छी बढ़वार के लिए 50 कि.ग्रा. यूरियाध हैक्टेयर की दर से छिड़क दें।
17.टमाटर में झूलसा रोग की निरंतर निगरानी करते रहें। लक्षण दिखाई देने पर बाविस्टीन (/1.0 ग्रामध्लीटर पानी या डाईथेन एम 45 (/2.0 ग्राम ६ लीटर पानी में मिलाकर छिड़क दें।

उद्यान :-

इस माह वातावरण का तापमान काफी कम हो जाता है। अंतः सभी प्रकार की फसलों को पाले के कुप्रभावों से बचाना चाहिए। आलू, सरसों, मटर, चना और मसूर आदि फसलों पर पाले का कुप्रभाव अधिक होता है। पाले से बचाव के बारे में जनवरी माह के कार्यों में भी विस्तार से बताया गया है।

तिलहनी फसलें :-

1. आंवले के तैयार फलों को तोड़कर बाजार में बिक्री हेतु भेजें। मूलवृंत हेतु बीज का प्रबंध करें।
2.मौसमी, माल्टा, नींबू और किन्नों आदि के तैयार फलों को सही अवस्था पर तोड़कर बाजार में बिक्री हेतु भेजें।
3. लोकाट एवं कटहल के पेड़ों के थाले बनाकर उनमें सिंचाई अवश्य करें।
4. आम या अन्य फलों के बागों में खाद व उर्वरकों का प्रयोग करने का यह सही समय है। आम के पौधों में गोबर की खाद 15, 30, 45, 60, 75 कि.ग्रा.ध पौधा उम्र के हिसाब से क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम वर्ष व अधिक उम्र के हिसाब से दें। साथ ही उर्वरकों की संस्तुत मात्रा का भी प्रयोग इसी समय करें।
5.अमरूद में सिंचाई करें. तैयार फलों को सही अवस्था पर तोड़कर बाजार में बिक्री हेतु भेजें। अमरूद में वानस्पतिक प्रवर्धन हेतु ग्राफ्टिंग आदि का कार्य सम्पन्न करें।
6. पोपलर की नर्सरी की सिंचाई करें।
7. क्यारियों अथवा गमलों लगे हुए एकवर्षीय पुष्पों में आवश्यकतानुसार निकाई एवं सिंचाई करें।
8. राजनीगंधा फसल में निकाई-गुड़ाई करें।
9. कलकतिया गुलाब की जमीन से 30 सें.मी. ऊपर से कटाई-छंटाई अवश्य सम्पन्न करें।
10. गेंदे की फसल में पूष्प सड़न रोग के आक्रमण की निगरानी करते रहें। यदि लक्षण दिखाई दें तो बाविस्टिन / 1 ग्रामध लीटर पानी अथवा इन्डोफिल एम 45 / 2 एम.एल ध्लीटर पानी में मिलाकर आसमान साफ होने पर छिड़क दें।
11. गेंदे के तैयार फूलों को तोड़कर बिक्री हेतु बाजार भेजें।

पेश है नया
EURO 45 PLUS
4X4
चारों पहिये करे काम
ताकत. सुरक्षा. गति. आराम
35 kW
(47 HP)
8+8
सिंक्रो शटल
POWERTRAC
EURO
*नियम व शर्तें लागू

जानिए मैसी फर्गुसन ट्रैक्टर्स के
फीचर्स, कीमत, लोकप्रियता
और खरीदने के फायदे
MERIKHETI
MASSEY FERGUSON
241 DI 4WD
MASSEY FERGUSON
1030 DI MAHA SHAKTI
MASSEY FERGUSON
1035 DI